CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्र: 3/64

7.2

रवीन्द्र संगीत

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतमिलाप, करौंदी
वाराणसी-5

ग्रन्थालय
वाराणसी-५
3/64

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अ : 3/64
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भदैनी, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रवीन्द्र संगीत

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पच्चीस गीतों का
स्वरलिपि सहित भावानुवाद

समालोचनार्थ

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

प्रस्तुतकर्ता
राधेश्याम पुरोहित

सम्पादक
लक्ष्मीनारायण गर्ग

प्रकाशक
संगीत कार्यालय–हाथरस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुद्रक
चन्द्रशेखर शर्मा
संगीत प्रेस, हाथरस (उ० प्र०)

इस पुस्तक के सभी गीतों का स्वरलिपि सहित
सर्वाधिकार राधेश्याम पुरोहित के अधीन है !

भेंट — दो रुपया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

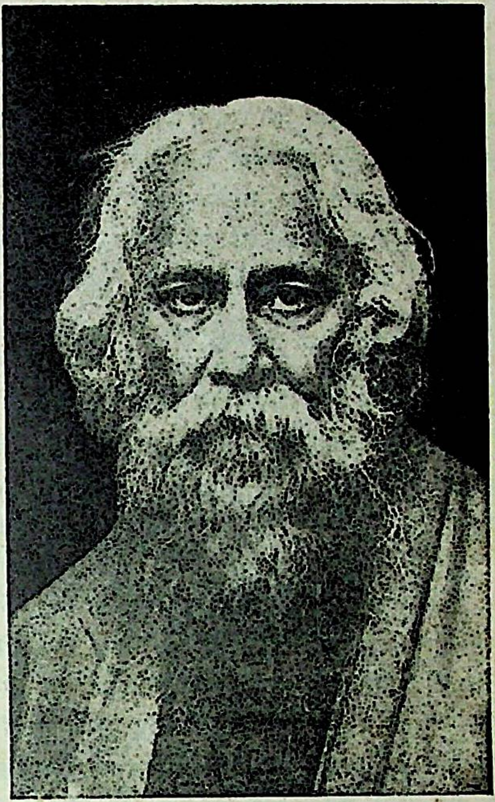

रवीन्द्र-जयन्ती पर रवीन्द्र के कृतित्व को स्वराभूषणों द्वारा अलंकृत करके हम 'रवीन्द्र संगीत' के नाम से हिन्दी जगत को अर्पित कर रहे हैं। स्व० रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लगभग चार हज़ार ऐसे छन्दों की रचना की जिन्हें गेय कहा जासकता है। उनका छन्द स्वतः संगीत में बँध जाता था। जिसमें शास्त्रीय और लोक संगीत दोनों का प्राकृतिक समन्वय विद्यमान रहता था, और यही रवीन्द्र-संगीत की विशेषता है। अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने शास्त्रीय और लोकसंगीत का ऐसा धरातल प्रस्तुत किया जिस पर कलाकार के अमूर्त्त भाव मूर्त्त हो उठते हैं। चेतना की कल्पना शक्ति को प्रेरित करके व्यंजना अथवा आकृति की समृद्ध शक्ति के द्वारा उनके गीत रूप और गति की सफल अभिव्यक्ति करने में सक्षम हैं।

बंगला भाषा में नाद सम्पत्ति का भण्डार है, अतः बंगला काव्य तो एक प्रकार का संगीत ही है। १८ वीं और १९ वीं सदी में बंगला धुनें कीर्त्तन और शास्त्रीय संगीत के प्रभाव से रंग गई थीं। किन्तु टैगोर के छन्द ने एक ऐसा मोड़ प्रदान किया जो संगीतकार के लिये आनन्द की मार्मिक अनुभूति बनकर रह गया। कविवर टैगोर का संगीत-अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्म था, उनकी आवाज़ में एक सिद्धगायक के कण्ठ जैसी मधुरिमा निहित थी। छन्द की गत्यात्मक तरंग में वे अपना कवि और संगीतज्ञ हृदय लेकर एक सम्राट की भांति विचरण किया करते थे। उनके छन्द की यह विशेषता है कि उसको विभिन्न लयों में गाया जा सकता है; किन्तु उसके लिये ऐसे गायक की आवश्यकता है, जिसके मनान्तर्गत भावों में सौन्दर्य विद्यमान हो और उसका नैतिक स्तर अत्यन्त उत्कृष्ट हो। अतएव, रवीन्द्र-संगीत जहाँ स्वच्छन्द-तरंग की भाँति स्पष्ट और सरल है, वहाँ प्रस्तुतीकरण में कठिन भी है।

एक सफल चित्रकार, संगीतकार तथा कवि होने के नाते टैगोर स्वयं कलात्मक सौन्दर्य के प्रतिबिम्ब स्वरूप थे। संगीत के प्रति अन्य कलाओं की अपेक्षा उनके विचार अधिक उत्कृष्ट थे। जगत की आत्मा अथवा ईश्वर प्राप्ति के लिये 'संगीत' उनकी दृष्टि में उपासना का पुष्प था। प्रकृति का सानिध्य रवीन्द्र को सदैव मिलता रहा, अतः उसकी गोद में जिस गेयकाव्य का निर्माण उनके द्वारा हुआ, वह विश्व-साहित्य में अप्रतिम है। किसी को क्या मालूम है कि जब एक ओर सूर्य का अवसान हो रहा होता है और दूसरी ओर से तारे उद्भूत होते हैं तो तट पर बैठा कवि गगन की ओर निहारता हुआ कहाँ खोजाता है? यह आत्मविस्मृति की भावना ही शब्द और स्वरों को कहीं से खोज-खोजकर लाती है और छन्द के बंधन में पिरोकर उसका एक सुनहरी हार बना देती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हर एक कवि के गीत नहीं गाये जासकते; इसी प्रकार हर गायक का संगीत शब्दों का चोला पहनने के योग्य नहीं होता। जो कवि काव्य-रचना के समय गायेगा और जो गायक गायन के समय काव्य की आत्मा के निकट रहेगा उसी को सफलता प्राप्त हो सकती है। अपने एक अनुभव में टैगोर ने कहा है—"गान में जब शब्द होते हैं तो उन शब्दों के लिये यह उचित नहीं कि वे गान का अतिक्रमण करजायें, वहाँ वे गान के वाहन मात्र हैं। गान अपने ही ऐश्वर्य से बड़ा है—वाक्य की गुलामी वह क्यों करने लगा? वाक्य जहाँ समाप्त होता है वहीं गान शुरू होता है जिसे वाक्य प्रगट नहीं कर सकता उसे गान करता है, इसीलिये वह अनिर्वचनीय है।"

एक स्थान पर टैगोर ने लिखा है कि गुनगुनाते-गुनगुनाते जब भी मैंने कोई पंक्ति लिखी है, तभी देखा है कि स्वर जिस स्थान पर वाक्य को उड़ा लेगया, वहाँ तक वाक्य पैदल चलकर पहुंच ही नहीं सका। तब ऐसा लगता है कि जिस गोपन बात को सुनने के लिये मन में साध पोष रहा हूँ, वह मानो वनराज की श्यामलिमा में मिला हुआ है, पूर्णिमा रात्रि की निस्तब्ध शुभ्रता में डूबा हुआ है, दिगन्तराज की नीलाभ सुदूरता में अवगुण्ठित होरहा है। वह मानो समस्त स्थावर-जंगम की गूढ़ और भेद भरी बात है।

बचपन का एक गीत जो टैगोर के अन्तस्तल में वर्षों तक स्थाई रहा वह था—"तो मायि विदेशिनी साजिये के दिले" (तुम्हें विदेशिनी के वेश में किसने सजा दिया) इस पद ने एक दिन टैगोर को दूसरा गान लिखने के लिये बाध्य कर ही दिया अतः पहली पंक्ति इस प्रकार लिखी गयी—"आमि चिनि गो चिनि तोमारे आगो विदेशिनी" (ऐ विदेशिनी, मैं तुम्हें पहचानता हूं, पहचानता हूँ।) टैगोर का कहना था कि यदि मेरे इस गान के साथ स्वर न होता, तो उसकी क्या दशा होती, कह नहीं सकता; किन्तु स्वर के जादू ने मेरे मन में विदेशिनी की एक अपूर्व मूर्ति साकार करदी। ब्रह्माण्ड की विश्वमोहिनी विदेशिनी के द्वार पर स्वर ने मुझे अनायास ही ला खड़ा किया। कभी-कभी जब बोलपुर के रास्ते से कोई गाता हुआ निकलता तो मुझे लगता कि बाउल का गान भी ठीक वही बात कह रहा है जो मेरे भावों के पिंजड़े में क़ैद थीं। मन उसे पकड़कर चिरन्तन बनाकर रखना चाहता है, किन्तु कर नहीं पाता। उस अपरिचित पक्षी के निःशब्द आवागमन की सूचना स्वर के सिवाय और कौन दे सकता है? इसीलिये गान की पुस्तक में मुझे सदैव संकोच लगता है। संगीत को छोड़कर उसके वाहनों को सजा रखना ऐसा ही होता है, जैसे गणेश को छोड़ उनके चूहे को पकड़ रखना।"

रवीन्द्र के गीतों में एक रहस्य है जो सहज ही बोधगम्य नहीं। केवल साधक और सहृदय के लिये उस रहस्य का द्वार खुलता है और वह रवीन्द्र के अन्तस्तल का स्पर्श करने में सक्षम होता है। शिल्पी, गायक और कवि होने के नाते उनकी रचनाओं में त्रिवेणी का एक ऐसा आनंद मिलता है जिसमें अवगाहन कर सांसारिक राग और द्वेष घुल जाते हैं. लोक और परलोक प्रकाशित हो उठते हैं। कलाजन्य-आनन्द के द्वारा सत्य की उपलब्धि रवीन्द्र-संगीत का मूल उद्देश्य है, इसीलिए बंगाल में इसकी एक समृद्ध परम्परा विद्यमान है। संगीत, साहित्य, सौन्दर्य और सत्य का समन्वय होने के कारण रवीन्द्र-संगीत संस्कृति और कलात्मक जगत का सबसे अधिक सम्पन्न रूप है।

प्रस्तुत पुस्तक संगीत कार्यालय द्वारा हिन्दी जगत के लिये प्रथम प्रयास है, जिसको संगीत-प्रेमी साधकों ने अपनाया तो निश्चय ही यह परिश्रम सार्थक सिद्ध होगा और रवीन्द्र का संगीत हिन्दीभाषियों में अनुप्राणित हो उठेगा।

लक्ष्मीनारायण गर्ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आशीर्वाणी

श्री राधेश्याम पुरोहित से आज उनके द्वारा किये गये बंगला रवीन्द्र संगीत का हिन्दी रूपान्तर सुर सहित सुन कर बड़ा संतोष हुआ। हिन्दी भाषा के बारे में मेरा ज्ञान सामान्य होते हुये भी मुझे बचपन से ही नाना प्रकार के हिन्दी गीत सुनने और सीखने का मौका मिला है। हिन्दी गीतों के सुर में बंगला गीत प्रस्तुत करना, जिसे हम चलती बंगला में "गान-भाँगा" (गीत तोड़ना) कहते हैं, ऐसे गीत भी ठाकुर परिवार में प्रचलित हुये हैं। लेकिन बंगला गीतों को और विशेष रूप से रवीन्द्र संगीत जैसे सूक्ष्म भाव और भाषायुक्त गीतों का मूल सुर अविकल रख कर हिन्दी में रूपान्तरित किया जा सकता है—इसका दृष्टान्त मैंने आज पहली बार पाया है।

मैंने पहले ही कहा है कि गीतों के अनुवाद की भाषा के बारे में मैं अपने विचार प्रगट करने में अक्षम हूँ। लेकिन रूपान्तरित गीत जो सरलता से मूल रवीन्द्र संगीत के सुर में गाये जा सकते हैं, यह मैंने आज उपलब्ध किया है। और इस दृष्टि से श्री राधेश्याम का कृतित्व अति प्रशंसनीय मानती हूं। मैं अपने अनुभव से कहती हूं कि मेरे परिचित हिन्दी के एक बड़े पंडित भी इस प्रकार के कार्य को करने के प्रस्ताव मात्र से भयभीत होकर पीछे हट गये थे। ऐसी दशा में श्री राधेश्याम ने जो यह कठिन व्रत ग्रहण किया और अन्त तक उसे निभाया यह उनके आत्म प्रत्यय और निष्ठा का परिचायक है। भारतीय प्रदेशों में ऐक्य और सद्भावना लाने की यह अभिनव प्रचेष्टा अति प्रशंसनीय है। श्री राधेश्याम की यह प्रचेष्टा सफल हो, यह आर्शीवाद करती हूं।

शांतिनिकेतन
२० मार्च, १९५८

(हः) इन्दिरा देवी चौधुरानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

श्री राधेश्याम पुरोहित से मैं अच्छी तरह परिचित हूं। ये विश्वभारती विश्वविद्यालय के बी. ए. (ऑनार्स) हैं और अर्थशास्त्र में वहीं से एम. ए. कर रहे हैं। संगीत में भी इनकी प्रगाढ़ अभिरुचि है। बंगला-भाषा पर इन्होंने सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त किया है और 'विश्व-भारती' में रहने के कारण ये 'रवीन्द्र-संगीत' के सच्चे प्रेमी भी हैं। हिन्दी तो इनकी मातृ भाषा ही है। इसीलिये इन्होंने रवीन्द्रनाथ के कुछ गीतों का साधु हिन्दी में रूपांतर करने का बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। श्री पुरोहित की विशेषता यह है कि ये रवीन्द्रनाथ द्वारा दिये गये अपने गीतों के मौलिक सुरों में गा भी सकते हैं। इस प्रकार ये संगीतज्ञ और गायक भी हैं। इनकी इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी भाषा-भाषी कुछ नवीन वस्तु प्राप्त करेंगे। वह नवीन वस्तु है रवीन्द्रनाथ के गीतों का हिन्दी अनुवाद। हिन्दी में अनूदित इन गीतों को 'रवीन्द्र संगीत' के शास्त्रीय नियमों के अनुसार गाया भी जा सकता है। तात्पर्य यह है कि इस अनुवाद में गेय सुरों पर भी पूरा ध्यान रखा गया है। यह कहा जा सकता है कि ये रवीन्द्रनाथ के गीतों को भाषा और संगीत दोनों दृष्टियों से उनकी मौलिक विशेषताओं के साथ हिन्दी भाषी अथवा हिन्दी व्यवहारी जनों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक के कुछ गीतों को मैंने श्री पुरोहित से सुना है। मैं वैसे संगीत के विषय में अधिक जानकारी नहीं रखता, फिर भी जब ये इन गीतों को गा रहे थे तब मैंने अनुभव किया कि इस कार्य में इन्हें पूरी सफलता मिली है। श्री पुरोहित रवीन्द्रनाथ के पचीस गीतों को उनके जन्म दिन (बंगला पचीस वैशाख) के अवसर पर प्रकाशित कर रहे हैं। यह निश्चय ही बहुत ही उपयोगी प्रकाशन होगा। मैं समझता हूँ कि बंग प्रदेश के बाहर भारत में रवीन्द्रनाथ के काव्य तथा संगीत दोनों के क्षेत्रों में अवदानों को प्रचारित-प्रसारित करने के लक्ष्य के कारण यह कार्य उक्त कवि और गायक के प्रति वास्तविक श्रद्धा और सेवा का कार्य प्रमाणित होगा। इस क्षेत्र में मैं श्री पुरोहित की सम्पूर्ण सफलता का अभिलाषुक हूँ। रवीन्द्रनाथ के संगीत, काव्य और चित्र में एक सार्वभौमिक मर्मस्पर्शिता है। किन्तु इस मर्मस्पर्शिता की अनुभूति अ-बंगाली व्यक्तियों में कुछ अस्पष्ट रूप में देखी जाती है। कुछ लोग तो इन (रवीन्द्रनाथ के संगीत काव्य और चित्र) को आलोचनात्मक ढँग से देखते हुये पाये जाते हैं। मुझे यह इसलिये कहना पड़ रहा है कि मैंने स्वयं कुछ लोगों को ऐसा करते-कहते देखा-सुना है। श्री पुरोहित ने 'रवीन्द्र संगीत' को कुशल संगीतविद और श्रेष्ठ काव्य के प्रेमी के रूप में अच्छी तरह समझा-बूझा है। इसीलिये ये पूर्ण प्रवीणता के साथ इन गीतों को मौलिक सुरों में हिन्दी का रूप दे सके हैं। अब मुझे आशा है कि हिन्दी संसार के कवित्वरसिक और संगीत के मर्मज्ञों में इस पुस्तक का यथोचित समादर होगा।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या
सभापति विधान परिषद,
पश्चिम बंग, कलिकाता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिचय

श्री राधेश्याम पुरोहित विश्व-भारती के छात्र के रूप में यहाँ काफी दिनों से अध्ययन कर रहे हैं। अतः वे यहाँ के जीवन से घनिष्ठ भी हो गये हैं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के साहित्य और सङ्गीत की ओर इनका स्वाभाविक अनुराग है। यद्यपि आपकी मातृभाषा हिन्दी (राजस्थानी) है, लेकिन यहाँ अध्ययन करने के कारण बंगला-भाषा के प्रति इनका मन गंभीर भाव से आकृष्ट हुआ है। आपने रवीन्द्र साहित्य का अच्छा अध्ययन किया है और उसे अनुवादित करके हिन्दी भाषा-भाषी लोगों के लिये सुलभ भी किया है। इस अल्प उम्र में ही इन्होंने रवीन्द्रनाथ तथा अन्यान्य बंगाली कथाकारों की रचनाओं से आठ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। उनके इस उत्साह को देखकर रवीन्द्रनाथ के संगीत को हिन्दी में रूपान्तर करने की संभावना पर मेरी उनसे आलोचना हुई थी। बंगाल संगीत को मौलिक रूप में रूपांतर करना बड़ा कठिन काम है। लेकिन इस कार्य की कठिनता को देख कर भी श्री राधेश्याम पीछे नहीं हटे। अतः रवीन्द्र के गीत हिन्दी में भी मौलिक सुर और ताल में गाये जा सकें, इसके प्रति मैंने इनसे ध्यान रखने के लिये कहा। श्री राधेश्याम मुझसे लगभग ५-६ वर्षों से बंगला रवीन्द्र-सङ्गीत सीख रहे थे। अतः रवीन्द्र संगीत के सुर और छन्द के बारे में अभिज्ञ हो गये थे। इसलिये प्रस्तावित गीतों के रूपांतर के कार्य में वे सफल रहेंगे, इस बारे में मैं प्रारम्भ से ही निश्चित था।

कुछ दिनों के बाद जब वे एक-दो करके रवीन्द्र के गीतों का हिन्दी रूपांतर करके मुझे सुनाने लगे तो मैंने अनुभव किया कि उनके रूपांतरित गीत भी बंगला रवीन्द्र-संगीत की तरह मूल सुर, लय और ताल में गाये जा सकते हैं। श्री राधेश्याम के गीतों की भाषा भी बड़ी मधुर लगी। अतः मैंने उनसे कहा कि वे इसी प्रकार के गीतों का और भी रूपांतर करें और रवीन्द्रनाथ के विभिन्न प्रकार के गीतों को स्वरलिपि सहित हिन्दी भाषा में प्रकाशित करें। इस पुस्तक के ये पच्चीस गीत उनकी उस चेष्टा का ही फल है। ये सभी गीत मूल रवीन्द्र संगीत के सुर में गाये जा सकते हैं। साथ ही मैंने यह भी अच्छी तरह अनुभव किया है कि रवीन्द्रनाथ ने अपने बंगला गीतों में जो भाव रखा था, श्री राधेश्याम के रूपांतरित हिन्दी गीतों में भी वह भाव अक्षुण्ण रहा है। अतः गीतों में कहीं भी सुर अथवा लय का विशेष परिवर्तन नहीं किया गया है। मेरा विश्वास है कि वर्त्तमान काल के हिन्दी कवि और गायक इन गीतों को जब मूल रवीन्द्र-संगीत के सुर में सुनेंगे तो किस प्रकार वैचित्रमय भाव को विचित्र रागिनी से गूँथा जा सकता है इसे वे अनुभव करेंगे तथा उससे अपनी सृष्टि के लिये भी नाना रूप से प्रेरणा लेंगे। मैं श्री राधेश्याम को उनकी इस प्रचेष्टा के लिये हृदय से आशीर्वाद देता हूँ। तथास्तु।

शांतिदेव घोष

१० मार्च, १९५८

अध्यक्ष, रवीन्द्र-संगीत और नृत्य विभाग

संगीत भवन, शांतिनिकेतन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तावना

इस पुस्तक के प्रारम्भ में तीन विद्वानों ने गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीतों पर आलोकपात किया है, जिसके बाद कुछ कहना अनावश्यक हो जाता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के गीतों की विशेषता और उनके शास्त्रीय नियमों का उल्लेख करते हुये तीनों महानुभावों ने मेरी इस नवीन प्रचेष्टा की ही अधिक प्रशंसा की है। लेकिन रवीन्द्र-संगीत के नाम से जो संगीत प्रचलित है वह हमारे भारतीय संगीत-शास्त्र के नियमों को कितना मानता है तथा उससे कितना प्रभावित है, यह जानना भी आवश्यक है। संस्कृत को जिस प्रकार भारतीय समस्त भाषाओं की जननी कहा जाता है उसी प्रकार भारतीय संगीत-शास्त्र को भी इस महादेश की समस्त संगीत-धाराओं का उत्स माना जा सकता है।

स्वल्प स्थान में रवीन्द्र संगीत की व्याख्या और उसकी विशेषतायें समझाना कठिन है। फिर भी संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि रवीन्द्र संगीत एक ऐसा संगीत है जहाँ भारतीय समस्त प्रदेशों का सङ्गीत हिलोरें भरता है। भाव को वहन करती है भाषा और भाषा की पृष्ठभूमि पर संगीत अपने को प्रकाशित करता है। शास्त्रीय संगीत में राग और रागिनियों की प्रधानता रहती है। भाषा वहाँ मुख्य स्थान नहीं रखती। दो या चार पंक्तियों को आश्रय करके गायक घंटों राग-रागनियों का विस्तार और आलाप कर सकता है। लेकिन रवीन्द्र संगीत में इसी स्थान पर तीन वस्तुएँ प्रमुख हैं। प्रथमतः भाव, द्वितीय भाषा और तृतीय संगीत। जैसा भाव हो उसी के अनुरूप भाषा और तद्रूप राग या रागिनी द्वारा उसे संगीत के रूप में गाया जाना—यही 'रवीन्द्र संगीत' की विशेषता है। अर्थात् रवीन्द्र संगीत में राग या रागिनी को जितनी प्रमुखता मिली है—काव्य को उससे कम नहीं मिली है। अतः इस संगीत का सम्पूर्ण आनन्द लेने के लिये काव्य की भाषा से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। लेकिन जब तक हिन्दी भाषा-भाषी अथवा हिन्दी व्यवहारी जनों के लिये यह संभव न हो, मैंने एक क्षुद्र प्रचेष्टा की है। वह है रवीन्द्र संगीत का उपरोक्त तीनों विशेषताओं सहित हिन्दी भाषा में रूपान्तर।

इस पुस्तक के गीतों की स्वरलिपि के प्रारम्भ में ताल और राग के नाम लिखे गये हैं। वैसे रवीन्द्रनाथ ने अपने कुछ गीतों के सिवाय कहीं भी राग अथवा ताल का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। मैंने इस पुस्तक में राग-रागिनियों का विश्लेषण इसलिये किया है कि रवीन्द्र संगीत से जो अपरिचित हैं वे जान सकें कि इन गीतों में कौन-कौन सी राग या रागिनियों का मिश्रण हुआ है। इसी स्थान पर यह लक्ष्यनीय है कि तीन या चार राग-रागिनियों का रवीन्द्रनाथ ने जैसा मिश्रण किया है उससे बहुधा एक नव-सुर की सृष्टि हुई है। यह नवीनता ही रवीन्द्र संगीत की विशेषता है।

इतिपूर्व तीनों महानुभावों ने यह संकेत किया है कि साहित्य का अनुवाद करना ही कठिन होता है। वहाँ भगवती की कृपा से मैंने रवीन्द्र-सङ्गीत जैसे सूक्ष्म भाव और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषा युक्त गीतों का मौलिक सुर सहित रूपांतर किया है । लेकिन इस कार्य में मैं कहाँ तक सफल रहा हूं, यह कहना मेरे लिये संभव नहीं है। साथ ही इस कार्य में कई त्रुटियों के रहने की संभावना है । दो-चार अ-शब्द कोशी हिन्दी शब्दों का प्रयोग भी मिल सकता है। इन सब के लिये एक मात्र मैं ही उत्तरदायी हूँ। मेरे अल्प ज्ञान के कारण जो त्रुटियाँ रहेंगी उन्हें सहृदय एवं, विद्वान पाठक सुधार लेंगे—ऐसी आशा करता हूँ।

अब कृतज्ञता और ऋण स्वीकार करना है।

मैं अपनी श्रद्धा श्रद्धेया इन्दिरा देवी चौधुरानी, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, श्रीयुत् शिवनाथ तथा श्रीयुत् शान्तिदेव घोष के प्रति व्यक्त करता हूँ—जिन्होंने आशीर्वाद तथा बहुमूल्य सुझाव देकर इस पुस्तक का प्रकाशन संभव किया है।

अंत में निवेदन करूँगा कि यह पुस्तक मेरी अपनी प्रचेष्टा से कभी प्रकाश में नहीं आती। प्रथमतः मैंने कभी यह विचार ही नहीं किया था कि जो गीत मैं लिखता हूँ उन्हें पुस्तक आकार में प्रकाशित करना होगा और द्वितीयतः इन गीतों को रवीन्द्र-संगीत के नियमों के अनुसार स्वरलिपि-बद्ध करना होगा। मेरे लिये उपरोक्त कार्य असंभव था। इसलिये इस पुस्तक को प्रकाशित करने का सम्पूर्ण श्रेय श्रीयुक्ता तृणारॉय, पी० एच० डी० (वॉन) सुरश्री (कलकत्ता) को ही है। आपने इस पुस्तक की स्वरलिपि अति अल्पकाल में प्रस्तुत की है तथा गीतों के राग-रागिनियों का विश्लेषण और भाषा एवं छन्द सम्बन्धी बहुत से सुझाव दिये हैं। उनके इस बहुमूल्य कार्य के लिये उन्हें धन्यवाद या आभार प्रदर्शित नहीं करूँगा। कारण, यह दोनों शब्द ही उनके लिये अपर्याप्त हैं। इस पुस्तक में उनके सहयोग को मेरे प्रति उनके असीम स्नेह का प्रतीक चिरकाल तक मानता रहूँगा। एवमस्तु॥

२५ वैशाख—बंगला सन् १३६६
८ मई १९५९
शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

राधेश्याम पुरोहित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरलिपि-संकेत

पंडित भातखण्डेजी के मतानुसार ही स्वरलिपि प्रस्तुत की गई है। लेकिन इस पुस्तक की आवश्यकता और सुविधा के लिये कुछ नियम और चिह्न जोड़े गये हैं। चिन्हों की व्याख्या निम्नलिखित रूप से माननी चाहियेः—

(१) सा़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नि़—स्वरग्राम के नीचें विंदु रहने पर उसे मंद्र सप्तक का स्वर समझना चाहिये।

सा रे ग म प ध नि—स्वरग्राम में यदि कहीं कोई चिन्ह न रहे तो उसे मध्य सप्तक का स्वर मानना चाहिये।

सां रें गं मं पं धं निं—स्वरग्राम के ऊपर विंदु रहने पर उसे तार सप्तक के अन्तर्गत समझना चाहिये।

(२) रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ —स्वर के नीचे "—" चिन्ह रहने पर उसे कोमल स्वर समझना चाहिये।

(३) मॅ —मध्यम के ऊपर "।" चिन्ह रहे तो उसे तीव्र समझना चाहिये।

(४) ‿ —जिन स्वरों के नीचे "‿" यह चिन्ह रहे उन्हें एक मात्रा के भीतर समझें। जैसे सारे ; सारेग ; सारेगम इत्यादि।

(५) ⌒ —दो या उससे अधिक स्वरों पर यह धनुषाकृति रहने पर उन्हें मीड़ द्वारा गाना होगा। जैसे—सारे ; सारेग इत्यादि।

(६) - —जिस स्वर के बाद "-" यह चिन्ह रहे उसका स्थायित्व दो मात्रा होगा, जैसे सा -। सा - - होने पर तीन मात्रा होगा। अर्थात् ऐसे प्रत्येक चिन्ह के लिये एक मात्रा स्थायित्व मानना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(७) ऽ —यह चिन्ह गीत के किसी शब्द के बाद रहे तो उस शब्द के अन्त्यस्थ स्वर वर्ण (आ-कार, इ-कार, उ-कार इत्यादि) का उच्चारण करके निर्देशित मात्रा के अनुसार गाना चाहिये।

(८) रे^ग म^ग —किसी स्वर के ऊपर छोटे अक्षर में लिखे हुये अलंकारिक स्वर को 'कण' कहते हैं। ऐसे स्वर प्रधान स्वर के आगे हों चाहे पीछे, वहाँ क्षणकाल के लिये उन्हें स्पर्श करना पड़ता है।

(९) [ ] —यह निशान रहे तो स्वरों की पुनरावृत्ति करनी चाहिये।

(१०) { } —पुनरावृत्ति के समय ऐसा निशान भी रहे तो उसके अन्तर्गत स्वरों की पुनरावृत्ति नहीं होगी। जैसे:—

[सा रे ग म | { प ध नि सां }]

लेकिन इसी निशान के अन्तर्गत स्वरों पर यदि दूसरे स्वर लिखे हों तो पुनरावृत्ति के समय उन्हें गाना चाहिये। जैसे:—

[सा रे ग म | { प नि ध प / प ध नि सां }]

(११) ∧ | ∨ —गीत की पंक्ति के अन्त में यह निशान रहे तो उस पंक्ति का वहीं अन्त समझना चाहिये। वहाँ से पुनः स्थायी पर लौट सकते हैं अथवा गीत के आगे का हिस्सा शुरू कर सकते हैं।

(१२) , —कॉमा चिन्ह के द्वारा किसी गीत की पंक्ति के छन्द में जो विराम दिखाया गया है वह समय का नहीं बल्कि भाव का है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१३) (क) × —यह निशान स्वरलिपि के नीचे रहे तो वहाँ से 'सम' (ताल का प्रारम्भ) मानना चाहिये।

(ख) ० —यह चिन्ह खाली का है।

(ग) २, ३ —इत्यादि द्वारा सम-खाली के अलावा दूसरे ताल निदर्शित होंगे।

(१४) | —"|" इस लम्बी रेखा के द्वारा ताल का विभाजन दिखाया गया है। जैसे:—

सा	रे	ग	|	रे	ग	म	|
×				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरूप

गीत	राग	पृ० सं०
१ अरी बधू सुन्दरी	कालिंगड़ा-रामकली	७०
२ अरे आओ रे	अड़ाना-बहार, मिश्र	७७
३ आज वर्षण मुखरित	पंचम वसंत मिश्र	४७
४ आज वसंत जाग्रत	बहार मिश्र	६२
५ उस आसन तले	कीर्तनांग	१०९
६ ओ भुवन मन मोहिनी	भैरव भैरवी मिश्र	२१
७ ओरे गृहवासी	कल्याण प्रकार	६७
८ झरे-झरे-झरे-रंग का झरना	बहार अड़ाना मिश्र	७३
९ तुम कुछ दे जाओ	पीलू खम्माज	९३
१० तुम्हारे असीम में	बिहाग	१०६
११ दूर गाँव से	माँड मिश्र	८१
१२ ध्वनित आह्वान	खट मिश्र	२५
१३ नमो नमो नमो करुणाघन	गौड़मल्लार मिश्र	४५
१४ प्रखर तपन ताप से	भीमपलासी, मुलतानी, भैरवी मिश्र	३३
१५ बादल धारा चली गई	पीलू मिश्र	५५
१६ बादल बाउल बजा रहा रे	बिहाग, खम्माज	३७
१७ मेरा मन मेघ का साथी	मल्हार मिश्र	५१
१८ मेरे मिलन के लिये तू	बागेश्री बहार	८९
१९ मेरी मुक्ति आलोक में रे	केदार	११४
२० वायु बहे जोर-जोर	यमन-भूपाली	८५
२१ वीणा मेरी कौन सुर गावे	भैरवी मिश्र	२९
२२ शरत आलोक के	कालिंगड़ा-रामकली मिश्र	५९
२३ सावन गगन में घोर घनघटा	एक प्रकार की सावनी मल्लार	४१
२४ हिंसा से मत्त पृथ्वी	भैरवी-मिश्र	९६
२५ होगी जय, होगी जय	आसावरी-भैरवी मिश्र	१०१
२६ परिशिष्ट		११७

★

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

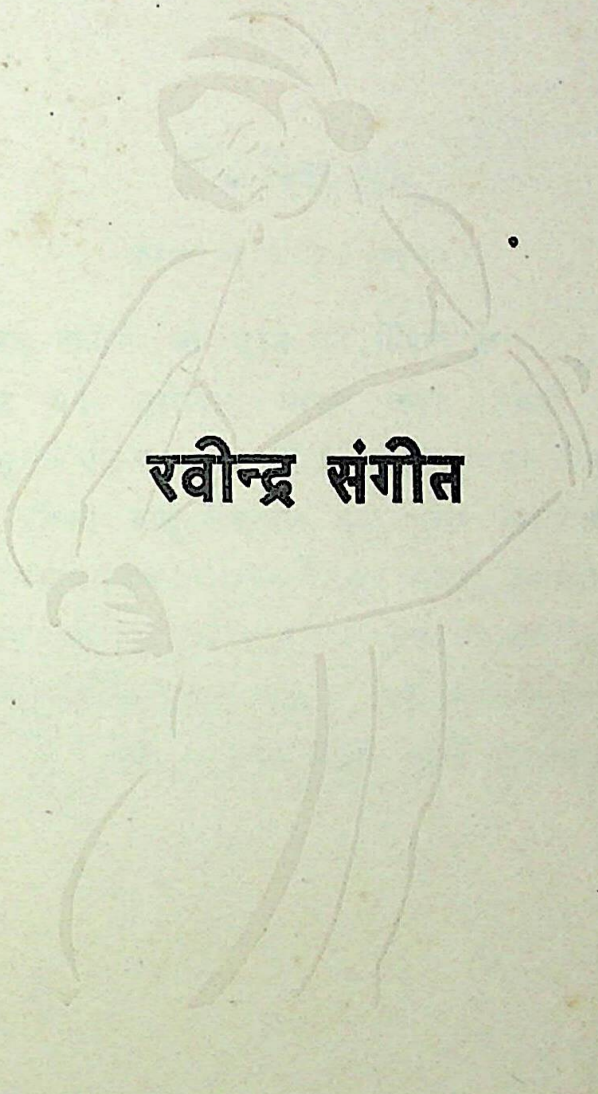

रवीन्द्र संगीत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

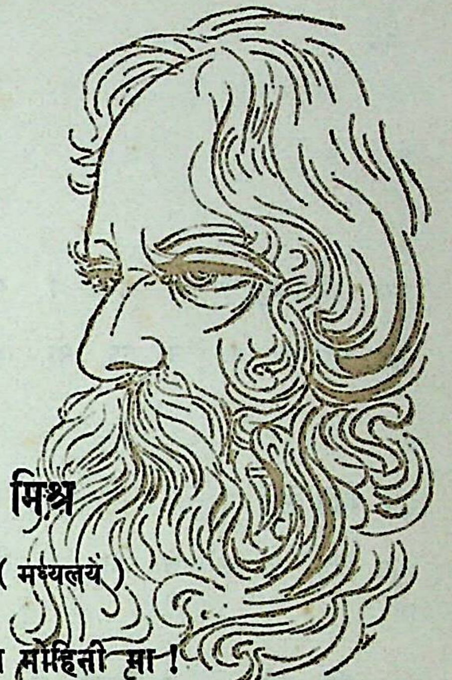

भैरव भैरवी मिश्र

कहरवा या त्रिताल (मध्यलय)

ओ भुवन मन मोहिनी ओ भुवन मन मोहिनी मा !
ओ निर्मल सूर्य करोज्वल धरणी जनक जननी ॥
नील-सिंधु जल धौत चरण-तल अनिल विकम्पित श्यामल अंचल,
अंबर चुम्बित भाल–हिमाचल शुभ्र तुषार किरीटिनी ।
प्रथम प्रभात उदय तव गगन में प्रथम सामरव तव तपोवन में,
प्रथम प्रचारित तव वन-भवन में ज्ञान-धर्म बहु काव्य काहिनी ॥
चिरकल्याणमयी तुम धन्य हो, देश–विदेश में अन्नदायी हो,
जाह्नवी यमुना विगलित करुणा पुण्य पीयूषस्तन्य वाहिनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| म ग
| ओ ऽ

नि
मग मनि निध ध | प मग म प | ध – – – | – – प मग
भुऽ वऽ नऽ म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ओ ऽऽ
× | ० | × | ०

नि
मग मनि निध ध | प मग म प | ध – – – | – – – –
भुऽ वऽ नऽ म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

ध नि सां – | ध निसां रें – | धनि सांरें गं – | – – – –
मा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

नि
रें सां नि ध | प मग म प | ध – – – | – – सा रे
भु व न म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ओ ऽ
× | ० | × | ०

ग ग ग रे | ग – ग रे | ग रे ग म | ग रे सा –
नि र म ल | सू ऽ र्य क | रो ऽ ज्व ल | ध र णी ऽ
× | ० | × | ०

सा सांनि सां सांरें | निसां ध प ध | नि ध – – | धनि सांरें सां सां
ज नऽ क जऽ | नऽ नी ज न | नी ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ ओ ऽ
× | ० | × | ०

नि
नि पनि ध ध | प मग म ग | ध – – – | – – – –
भु वऽ न म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

धु - धु धु	धु नि धु नि	सां - रें नि	सां सां सां सां
नी ऽ ल सि	न् धु ज ल	धौ ऽ त च	र ण त ल
×	०	×	०

धु गं रें गं	गं रें रें सां	नि - सां रें	सां नि धु प
अ नि ल विं	क ऽ म्पि त	श्याम ऽ म ल	अं ऽ च ल
×	०	×	०

सा धु धु धु धु	धु - धु धु	पधु निसां सां नि	धुप नि धु प
अ म् ब र	चु ऽ म्बि त	भाऽ ऽऽ ल हि	माऽ ऽ च ल
×	०	×	०

सा - सा सा	धु - नि सां	धु नि धु नि	सांगं रें रें सां
शु ऽ भ्र तु	षा ऽ र कि	री ऽ ऽ टि	नीऽ ऽ ओ ऽ
×	०	×	०

नि पनि धु धु	प मग म प	नि धु - - -	- - - -
भु वऽ न म	न ऽऽ मो हि	नी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सा सा सा सा	ग - ग ग	ग ग गरे ग	म म म पम
प्र थ म प्र	भा ऽ त उ	द य तऽ व	ग ग न मेंऽ
×	०	×	०

ग ग रे ग	- ग रे ग	रे ग म ग	रेग रे सा -
प्र थ म सा	ऽ म र व	त व त पो	वऽ न में ऽ
×	०	×	०

नि सा सा सा	धु - धु धु	प धु प नि	धु धु प प
प्र थ म प्र	चा ऽ रि त	त व व न	भ व न में
×	०	×	०

ग - म म	- नि धु प	ग - म ग	रेग रे सा -
ज्ञा ऽ न ध	ऽ र्मे व हु	का ऽ व्य का	ऽऽ हि नी ऽ
×	०	×	०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

धु	धु	धु	नि	धुनि'	सांरें	गुं	रें	रें	सां	सां	नि	सां	-	सां	सां
चि	र	क	ऽ	ल्याऽ	ऽऽ	ण	म	यी	ऽ	तु	म	ध	ऽ	न्य	हो
×				०				×				०			

सां															
धु	गुं	गुं	रें	गुं	-	रें	सां	नि	सां	रें	सां	सां	नि	नि	धु
दे	ऽ	श	वि	दे	ऽ	श	में	अ	ऽ	न्न	दा	ऽ	यी	हो	ऽ
×				०				×				०			

														नि	
पधु	निसां	नि	नि	धु	धु	प	मग	म	प	प	प	पम	प	धु	-
जाऽ	ऽऽ	ह्न	वी	य	मु	ना	ऽऽ	वि	ग	लि	त	कऽ	रु	णा	ऽ
×				०				×				०			

सा	-	सा	धु	-	धु	धु	-	धु	नि	सां	धु	नि	सां	गुं	रें
पु	ऽ	ण्य	पी	ऽ	यू	ष	ऽ	स्त	ऽ	ण्य	वा	ऽ	हि	नी	ऽ
×				०				×				०			

	नि							नि							
सां	सां	नि	धु	प	मग	म	प	धु	-	-	-	-	-	-	-
भु	व	न	म	न	ऽऽ	मो	हि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

इच्छानुसार गीत की प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति कर सकते हैं ।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

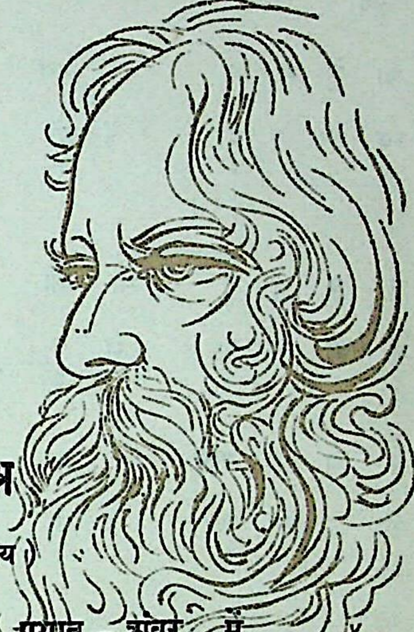

खट मिश्र

तीव्रा (मध्यलय)

ध्वनित आह्वान मधुर गंभीर प्रभात अंबर में,
शांति–संगीत बाजे चतुर्दिक भुवन मंदिरों में ।
अंतर में देखो महारूप को निखिल भुवन के परम बंधु को,
आओ आनन्दित शोभन साज से मिलन अंगन में ।।
कलुष कल्मष विरोध विद्वेष होये निर्मल होये निःशेष–
चित्त की बाधा दूर होये नित्य कल्याण काज में ।
मधुर स्वर में गाओ विहंगम पूर्व पश्चिम बंधु–संगम,
मैत्री बंधन पुण्यमय हो पवित्र विश्व समाज में ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	रे॒	म	म	–	मग	म	प	प	प	प	प	प	प
ध्व	नि	त	आ	ऽ	ह्वा	न	म	धु	र	ग	म्	भी	र
×			२		३		×			२		३	

ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	नि॒	प	ध॒	नि॒	–	ध॒	–
प्र	भा	त	अ	म्	ब	र	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प	ध॒	प	पनि॒	–	ध॒	ध॒	प	ध॒	प	पध॒	प	म	म
शा	ऽ	न्ति	संऽ	ऽ	गी	त	बा	जे	च	तुऽ	र	दि	क
×			२		३		×			२		३	

ग	ग	रे॒	ग	म	प	म	ग	रे॒	–	सा	–	–	–
भु	व	न	मं	ऽ	दि	ऽ	रों	ऽ	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	रे॒	म	म	–	–	–	ग	म	प	ध॒	–	–	–
ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

उपरोक्त गीत की पुनरावृत्ति करके नीचे गायें।

ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	सां	सां	ऽ	सां	–	सां	सां
अ	न्त	र	में	ऽ	दे	खो	म	हा	ऽ	रू	ऽ	प	को
×			२		३		×			२		३	

सां	रें॒	रें॒	सांरें॒	गं	रें॒	सां	नि	सां	रें॒सां	निसां	नि	ध॒	प
नि	खि	ल	भुऽ	'व	न	के	प	र	मऽ	बंऽ	ऽ	धु	को
×			२		३		×			२		३	

गं॒	गं॒	गं॒	गं॒	रें	गं॒	गं॒	गं॒रें	मं	गं॒		–	सां	सां
आ	ओ	आ	न	न्	दि	त	शोऽ	भ	न	सा	ऽ	ज	से
×			२		३		×			२		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें	सां	सां	ञि	-	ध	प	ग	म	प	ध	-	-	-
मि	ल	न	अं	ऽ	ग	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	रे	म	म	-	म	-	ग	म	प	ध	-	-	- ∧
ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		२		×			२		३	∨

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

सांगं	गं	गं	गं	गं	गंरें	गं	गंमं	मं	गं	रें	-	सां	सां
कऽ	लु	ष	क	लु	मऽ	ष	विऽ	रो	ध	वि	ऽ	द्वे	ष
×			२		३		×			२		३	

(सां)रें	रें	सां	रें	रें	सां	सां	सांरें	सां	सां	ञि	-	ध	प
हो	ऽ	ये	नि	र्	म	ल	होऽ	ऽ	ये	निः	ऽ	शे	ष
×			२		३		×			२		३	

रें	-	सां	रें	-	सां	सां	रें	-	सां	ञि	ञि	ध	प
चि	ऽ	त्त	की	ऽ	बा	धा	दू	ऽ	र	हो	ऽ	ये	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प	ञि	ध	प	-	म	पम	ग	-	रे	सा	-	-	-
नि	ऽ	त्य	क	ऽ	ल्या	णऽ	का	ऽ	ज	में	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

ध	ध	ध	नि	नि	सां	सां	रें	रें	सां	नि	-	सां	सां
म	धु	र	स्व	र	में	ऽ	गा	ओ	वि	हं	ऽ	ग	म
×			२		३		×			२		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध॒	ध॒	ध॒	नि	नि	सां	सां	निसां	रें॒	सां	सां नि॒	-	ध॒	प
पू	र्	व	प	शू	चि	म	बऽ	न्	धु	सं	ऽ	ग	म
×			२		३		×			२		३	

प	ग॒ं	ग॒ं	ग॒ं	रें	ग॒ं	ग॒ं	मंग॒ं	-	ग॒ं	रें॒	रें॒	सां	सां
मैं	ऽ	त्री	ब	न्	ध	न	पुऽ	ऽ	ण्य	म	य	हो	प
×			२		३		×			२		३	

रें॒	सां	सां	नि॒	-	ध॒	प	ग	म	प	ध॒	-	-	-
वि	ऽ	त्र	वि	ऽ	श्व	स	मा	ऽ	ज	में	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	रे॒	म	म	-	-	-	ग	म	प	ध॒	-	-	-
ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

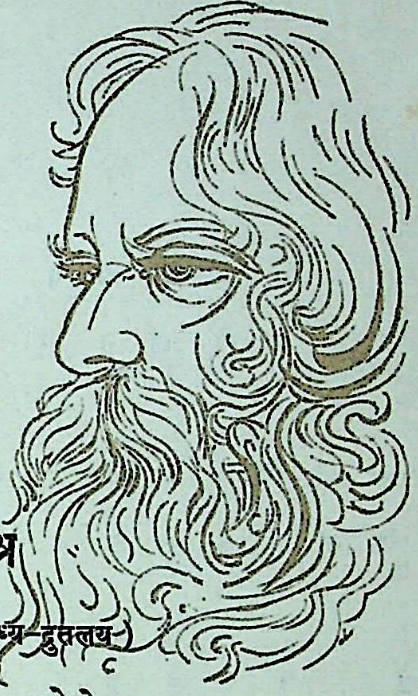

भैरवी-मिश्र

त्रिताल या कहरवा (मध्य-द्रुतलय)

वीणा मेरी कौन सुर गावे कौन नव राग सुनाये रे ।
मन में शंका क्यों लावे चमकित् भुवन सारा रे ॥
आया कौन राग आलाप के अंचल उसका डोले-
चरण नूपुर मदहोश उसके हुए हैं अब वे होले रे ॥
अंबर प्रांगन के आगे निःस्वर मंजिर बाजे ।
अश्रुत करताली जागे नव स्वर मानो साजे ॥
किसके परस की आशा तृणों में जागी भाषा ।
पवन भी बंधन तोड़े मचले किसके इशारे रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

													·	सा	नि़
														वी	ऽ

		ध॒		म						ध॒					
ध॒	–	प	म	ध॒	ध॒	प	म	म	ध॒	प	–	–	–	–	–
णा	ऽ	मे	री	कौ	न	सु	र	गा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

											म				
पसां	सां	नि॒	ध॒	प	प	म	ग॒	ग॒	म	म	ग॒	रे॒	–,	सा	नि़
कौऽ	न	न	व	रा	ऽ	ग	सु	ऽ	ना	ऽ	ये	रे	ऽ,	वी	ऽ
×				२				०				३			

		ध॒		म						ध॒					
ध॒	–	प	म	ध॒	ध॒	प	म	म	ध॒	प	–	–	–,	सा	रे
ना	ऽ	मे	री	कौ	न	सु	र	गा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ,	म	न
×				२				०				३			

रे						ग॒				म					
ग॒	–	सा	रे	ग॒	–	सा	रे	ग॒	रे	ग॒	ग॒	–	–	–	–
में	ऽ	शं	ऽ	का	ऽ	क्यों	ऽ	ऽ	ला	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

रे	ग॒	म	प	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	नि॒	–	सां	–	सां	–,	सा	नि़
च	म	कि	त	मु	ऽ	व	न	सा	ऽ	रा	ऽ	रे	ऽ,	"वी	ऽ"
×				२				०				३			

“वीणा मेरी कौन सुर गावे” को दो बार गाने के बाद आगे गायें।

												नि॒			
ध॒	ध॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	रें॒	सां	नि॒	प	सां	–	सां	रें
आ	या	कौ	न	रा	ऽ	ग	आ	ला	ऽ	ऽ	प	के	ऽ	अं	ऽ
×				२				०				३			

		गं॒		रें				रें		गं॒					
गं॒	गं॒	सां	रें	गं॒	–	सां	रें॒	गं॒	–	रें॒	–	सां	–	–	–
च	ल	उ	स	का	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सां सांगं रें सां	नि नि ध म	ध – नि नि	सांगं – – –
च रऽ ण नू	पु र म द	हो श उ स	केऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

		ग	
सांगं रें सां नि	ध प म ग	म – ग –	रे – सा नि
हुऽ ये हैं ऽ	अ ब वे ऽ	हो ऽ ले ऽ	रे ऽ "वीं ऽ"
×	२	०	३

पूर्व उल्लेखित अंश की पुनरावृत्ति करें।

सा प प प	प – प प	प म प म	ध – – प
अं ऽ ब र	प्रां ऽ ग न	के ऽ आ ऽ	गे ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

	ग	रे	
मप – ग ग	म म ग रे	ग रे सा –	– – – –
निःऽ ऽ स्व र	मं ऽ जी र	बा ऽ जे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

	सा		
ग – ध नि	सा सा रे नि	सा रे ग –	सा रे ग –
अ ऽ श्रु त	क र ता ली	जा ऽ गे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

ग	रे म	रे	
सा रे ग रे	सा रे म ग	ग रे सा –	– – – –
न व स्व र	मा ऽ नो ऽ	सा ऽ जे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

	सां	सां	
गं गं रें सां	ध ध नि सां	रें नि सां –	– – – सां
कि स के ऽ	प र स की	आ ऽ शा ऽ	ऽ ऽ ऽ तृ
×	२	०	३

सां	सां	सां	
रें – सां नि	ध ध नि सां	रें नि सां –	सां रें गं मं
णों ऽ में ऽ	जा ऽ गी ऽ	भा ऽ षा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

				सां				सां							
ग̲ं	ग̲ं	रें̲	सां	ध̲	ध̲	नि̲	सां	रें̲	नि̲	सां	–	–	–	–	सां
कि	स	के	ऽ	प	र	श	की	आ	ऽ	शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तृ
×				२				०				३			

सां				सां				सां							
रें̲	–	सां	नि̲	ध̲	ध̲	नि̲	सां	रें̲	नि̲	सां	–	–	–	–	सां
ष्णों	ऽ	में	ऽ	जा	ऽ	गी	ऽ	भा	ऽ	षा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
×				२				०				३			

सां				रें						रें					
ग̲ं	ग̲ं	ग̲ं	रें	ग̲ं	ग̲ं	ग̲ं	रें	ग̲ं	रें	ग̲ं	रें	मं	–	–	–
व	न	भी	ऽ	बं	ऽ	ध	न	तो	ऽ	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

		मं		रें											
मं	मं	ग̲ं	ग̲ं	ग̲ं	ग̲ं	रें̲	रें̲	रें̲	–	सां	–	सां	–,	"सा	नि̲"
म	च	ले	ऽ	कि	स	के	इ	शा	ऽ	रे	ऽ	रे	ऽ,	"वी	ऽ"
×				२				०				३			

गीत की पहली दो पंक्तियाँ गायें।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

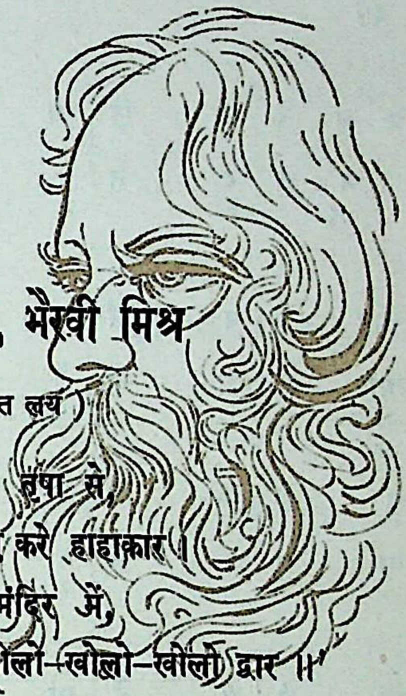

भीमपलासी, मुलतानी, भैरवी मिश्र

एकताल—(विलम्बित लय)

प्रखर तपन ताप से, आकाश काँपे तृषा से,
वायु करे हाहाकार ।
दीर्घ पथ के शेष में, पुकारा मंदिर में,
'खोलो–खोलो–खोलो द्वार ।।'
सुन किसकी पुकार
कब हुआ हूँ बाहर,
अभी मलिन होगा प्रभात का फूलहार ।
खोलो–खोलो–खोलो द्वार ।
मन में बाजे आशाहीना, क्षीण मर्मर वीणा ।
यह न जानूँ कोई है या ना, पाऊँगा उसका सार ।।
आज सारे दिन मेरे, प्राण में ये सुर भरे ।
अकेला कैसे वहूँ गान का भार ।
खोलो–खोलो–खोलो द्वार ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* ग॒	रे	सा	नि॒	सा	म	मप	ग॒म	पम	(म)प	–	–
प्र	ख	र	त	प	न	ताऽ	ऽऽ	ऽप	से	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

साप	प	प	मं	प	–	पध॒	पध॒प	मंप	मग॒	म	ग॒
आऽ	का	श	काँ	पे	ऽ	तृऽ	षाऽऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग॒	ग॒	म	प	प	नि	नि	नि	सां	सां	–	सां
वा	यु	ऽ	क	रे	ऽ	हा	हा	ऽ	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सां	ग॒ं	ग॒ं	रें	सां	सां	सांरें	(रें)सां	सां	नि॒	नि॒	–
दीं	ऽ	घं	प	थ	के	शेऽ	ष	में	ऽ	पु	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि॒	–	नि॒	नि॒सां	(सां)नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	प	प	प	नि॒
का	ऽ	रा	ऽऽ	म	न्दि	र	में	ऽ	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(नि॒)ध॒	नि॒	–	नि॒सां	सां	नि॒	ध॒	प	प	–	–	–
खो	लो	ऽ	खोऽ	लो	ऽ	द्वा	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

"प्रखर तपन ताप से" तक पुनरावृत्ति करें।

प	–	प	(प)म	ग॒	म	प	नि	नि	सां	–	सां
मु	ऽ	न	कि	ऽ	स	की	ऽ	पु	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

* पुनरावृत्ति के समय "प्रखर" शब्द को "मग॒" गायें।

प्रऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	त्रि	गं	रें	–	सां	(सां)नि	सां	–	त्रि	–	त्रि
क	ब	हु	आ	ऽ	हूं	बा	ऽ	ऽ	ह	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

त्रिसां	–	त्रि	त्रि	ध	ध	ध	प	–	–	–	–
आऽ	ऽ	भी	म	लि	न	हो	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प	प	प	प	पध	प	(प)मं	प	ग	मं	प	ध
प्र	भा	त	का	फुऽ	ल	हा	ऽ	र	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

मं	प	ग	मं	प	ध	(ध)मं	प	–	–	–	प
खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

सासा	प	पध	प	म	गरे	(रे)ग	–	रे	मग	–	रे
मन	में	बाऽ	जे	आ	शाऽ	ही	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सा	रे	ग	ग	ग	म	(म)ग	–	रे	सा	–	–
वी	ण	म	र्	म	र	वी	ऽ	ऽ	णा	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सासा	साप	प	प	प	पम	प	–	ध	धत्रि	–	(त्रि)ध
यह	नऽ	जा	नूँ	को	ईऽ	है	ऽ	या	नाऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(ध)प	ध	(ध)प	मम	ग	म	प	–	–	–	–	प
पा	ऊँ	ना	उस	का	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	प	प	म	(म)ग॒	म	प	पनि	–	नि	सां	सां
आ	ज	सा	रे	दि	न	मे	रेऽ	ऽ	प्रा	ऽ	ण
×		०		२		०		३		४	

सां	नि॒	गं॒	रें	सां	रेंसां	(सां)नि	सां	–	नि॒	–	–
में	ऽ	ये	सु	ऽ	रऽ	भ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि॒सां	सां	नि॒	नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	ध॒	प	प	प	–
अऽ	के	ला	कै	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	व	हूँ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प	–	ध	नि॒	सां	(सां)नि॒	सांरें	(रें)सां	नि॒	ध॒	प	ध॒
गा	ऽ	न	का	ऽ	ऽ	भाऽ	ऽ	र	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(ध)म॑	प	ग॒	म॑	प	ध॒	(ध॒)म॑	प	–	–	–	प
खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

“प्रखर तपन·······खोलो द्वार” तक पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

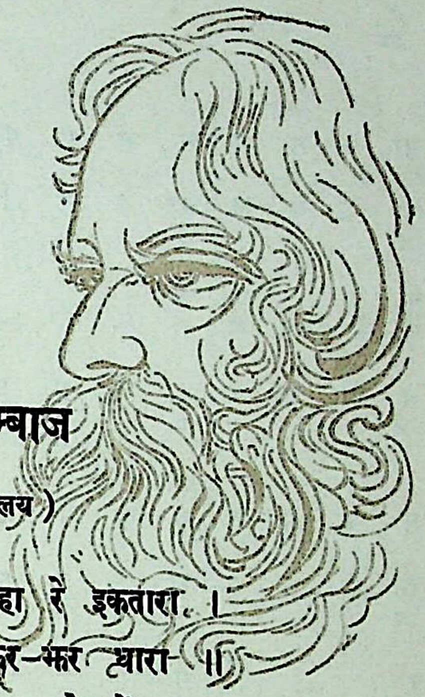

बिहाग, खम्बाज

कहरवा (मध्यलय)

बादल बाउल बजा रहा रे इकतारा ।
सारी बेला झरे झर-झर-झर धारा ॥
जामुन वन में धान खेत में,
आप मत्त अपने तानों में,
नाचत नाचत बावला हारा ॥
घनी जटा से घनाधार नभ में स्वर साजे ।
पात-पात पर टुप-टुप ध्वनि का नुपूर मधुर बाजे ॥
घर-बार छुड़ाता आकुल सुर में,
उदास घूमें पुर-पुर में,
पुरवैया में गृह हारा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

								प				म			
सा	–	ग	ग	ग	म	धप	प	ग	ग	म	म	ग	–	पम	ग
बा	ऽ	द्	ल	बा	ऽ	उऽ	ल	ब	जा	ऽ	र	हा	ऽ	रेऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग			प	म								नि		नि	
रे	रे	गप	म	ग	–	–	–	गप	म॑	प	नि	ध	नि	प	प
ब	जा	ऽऽ	र	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बऽ	जा	ऽ	र	हा	ऽ	ए	क
×				०				×				०			

				प											
प	ध	म	प	ग	म	रे	ग	सा	–	ग	ग	ग	म	धप	प
ता	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	द्	ल	बा	ऽ	उऽ	ल
×				०				×				०			

प				म				ग			प	म			
ग	ग	म	म	ग	–	पम	म	रे	रे	गप	म	ग	–,	प	–
ब	जा	ऽ	र	हा	ऽ	रेऽ	ऽ	ब	जा	ऽऽ	र	हा	ऽ,	सा	ऽ
×				०				×				०			

प	नि	–	नि	नि	सां	–	सांनि	धनि	–	प़	–	–	–	प	म॑
री	ऽ	ऽ	बे	ला	ऽ	ऽ	झऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	झ	र
×				०				×				०			

		सां		नि		नि						प			
प	सां	नि	सां	ध	नि	प	–	प	ध	म	प	ग	म	रे	ग
झ	ऽ	र	ऽ	झ	ऽ	र	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

"बादल बाउल बजा रहा रे" तक पुनरावृत्ति करें।

					नि										
प	म॑	ध	प	पनि	ध	नि	–	निसां	–	सां	–	सां	सां	सां	–
जा	ऽ	मु	न	बऽ	न	में	ऽ	धाऽ	ऽ	न	ऽ	खे	त	में	ऽ
×				०				×				०			

				नि											
पसां	–	सां	नि	ध	नि	सां	सां	सां	नि	रें	सांनि	धनि	नि	धप	–
आऽ	ऽ	प	म	ऽ	त	आ	ऽ	प	ऽ	न	ऽऽ	ताऽ	नों	मेंऽ	ऽ
×				०				×				०			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

										ध		ध			प		म	
प	सां	–	नि	|	नि	–	नि	ध	|	प	ध	प	प	|	म	पम	ग	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ना	ऽ	च	त	|	ना	ऽ	च	त	|	ना	ऽऽ	च	त
×				|	०				|	×				|	०			

सा	सा	ग	–	|	ग	म	प	–
बा	व	ला	ऽ	|	हा	ऽ	रा	ऽ
×				|	०			

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

							सां										रे	
सा	सा	–	सा	|	सा	–	नि़	–	|	सा	सा	रे	रे	|	रे	–	सा	नि़
घ	नी	ऽ	ज	|	टा	ऽ	से	ऽ	|	घ	नां	ऽ	ऽ	|	धा	ऽ	ऽ	र
×				|	०				|	×				|	०			

सा	सा	ग	ग	|	गम	म	प	म	|	गम	रे	ग	–	|	–	–	–	–
न	भ	में	ऽ	|	स्वर	ऽ	सा	ऽ	|	जेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				|	०				|	×				|	०			

												नि			ध			
गप	मं	प	मं	|	मंप	मंप	ग	मं	|	प	नि	ध	ध	|	प	मं	प	–
पाऽ	ऽ	त	पा	|	ऽऽ	ऽत	प	र	|	ढु	प	ढु	प	|	ध्व	नि	का	ऽ
×				|	०				|	×				|	०			

प		ध		|	प				|	ग		म		|				
मंप	ध	प	प	|	म	–	ग	ग	|	रे	पम	ग	–	|	–	–	–	–
नूऽ	ऽ	पु	र	|	म	ऽ	धु	र	|	रा	ऽऽ	जे	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				|	०				|	×				|	०			

			गं															
गंसां	सां	गं	रें	|	रें	–	सां	–	|	सां	–	सां	सां	|	सां	सां	सां	नि
घर	बा	र	छु	|	ड़ा	ऽ	ता	ऽ	|	आ	ऽ	कु	ल	|	सु	र	में	ऽ
×				|	०				|	×				|	०			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि								नि							
ध	नि	सां	–	सां	–	सां	नि	ध	नि	सां	नि	धनि	नि	धप	–
उ	ऽ	दा	ऽ	स	ऽ	घू	ऽ	में	ऽ	पु	र	पुऽ	र	मेंऽ	ऽ
×				०				×				०			

			सां	नि											
नि	नि	निसां	नि	ध	नि	धप	–	प	सां	–	–	नि	–	–	ध
पु	र	वैऽ	ऽ	या	ऽ	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध				प			
प	–	ध	प	म	–	प	–
गृ	ऽ	ह	ऽ	हा	ऽ	रा	ऽ
×				०			

गीत की प्रथम दो पंक्तियाँ गायें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

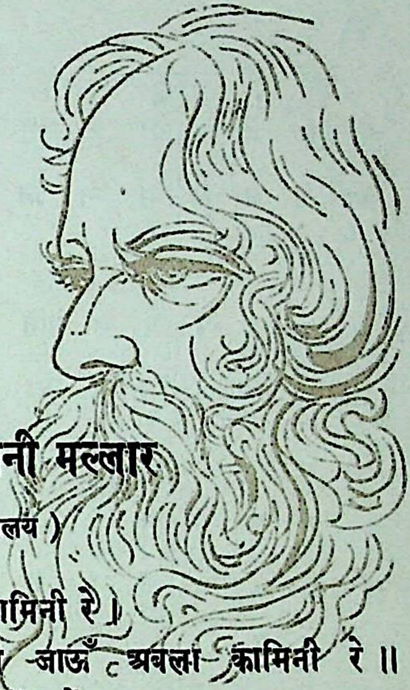

एक प्रकार की सावनी मल्लार

त्रिताल (मध्यलय)

सावन गगन में घोर घन घटा निशीथ यामिनी रे।
कुंजवन सखि कैसे जाऊँ अबला कामिनी रे ॥
उन्मद पवन यमुना तर्जित, घन-घन गर्जित मेंह।
विद्युत दमकत पथतरु लुंठित, थर-थर कम्पित देह ॥
घन-घन रिमझिम् रिमझिम् रिमझिम् बरसत नीरद पुंज।
शाल पियाले, ताल-तमाले निविड़ तिमिरमय कुंज ॥
कह रे सजनी ए दुख योगे कुंजे निरदय कान।
दारुण बंशी काहे बजावत, सकरुण राधा नाम ॥
मोतीहार से वेश बनादे, सींथि लगा मेरे भाले।
उड़त बिलुंठित लोल-चिकुर मम बाँधह चम्पक माले ॥
गहन रात में न जाओ बाला, नवलकिशोर के पास।
गरजे घन-घन, बहु डर पावत, कहे भानु तव दास ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

		प		प				रे							
रे	प	म	प	ग॒	रे	मग॒	रे	सा	रेग॒	ग॒रे	सा	रे	नि़	सा	–,
सा	ऽ	व	न	ग	ग	ऽन	में	घो	ऽऽ	रऽ	घ	न	घ	टा	ऽ,
×				२				०				३			

								नि॒							
म	म	प	प	प	म	मनि॒	नि॒	ग॒	–	–	–	रे	सा	रे	–
नि	शी	ऽ	थ	या	ऽ	मिऽ	नी	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

								प		नि॒		नि॒			
म	प	प	प	प	–	प	प	नि॒	–	ध	नि॒	ध	नि॒	ध	प
कुं	ऽ	ज	व	न	ऽ	स	खि	कै	ऽ	से	ऽ	जा	ऽ	ऊँ	ऽ
×				२				०				३			

म	म	प	म	प	–	प	पसां	नि॒सां	नि॒सां	नि॒	ध	प	म	ग॒रे	सा
अ	ब	ला	ऽ	का	ऽ	मि	नीऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

"सावन·······निशीथ यामिनी रे" तक पुनरावृत्ति करें ।

												रें			
म	प	प	प	प	प	प	नि	नि	नि	नि	सां	सां	–	सां	सां
उ	न	म	द्	प	व	ने	ऽ	य	मु	ना	ऽ	त	ऽ	र्जि	त
×				२				०				३			

								ध				ध			
म	म	प	प	प	–	प	ध	नि॒	–	धप	ध	प	–	–	–
घ	न	घ	न	ग	ऽ	र्जि	त	मे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ह	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

म	प	प	प	प	प	प	प	म	प	प	पनि	नि	सां	सां	सां
वि	द्	यु	त	द	म	क	त	प	थ	त	रूऽ	लु	ए	ठि	त
×				२				०				३			

		रें						ध				प			
नि	निरें	सां	नि॒	ध	ध	प	पध	म	–	पधप	मप	ग॒	–	–	–
थ	रऽ	थ	र	क	मू	पि	तऽ	दे	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ह	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	म	म	म	म	पम	ग	म	म
घ	न	घ	न	रि	म्	झि	म्	रि	म्	झि	म्	रिऽ	म्	झि	म्
×				२				०				३			

								ध				प			
ग	म	प	प	प	–	प	पध	म	–	पधप	मप	ग॒	–	रेसा	रे
ब	र	ष	त	नी	ऽ	र	दऽ	पुं	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ज	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

				ग						प					
ग	–	ग	ग	म	ग	म	–	गम	प	म	ग॒रे	मग॒	रे	सा	–
शा	ऽ	ल	पि	या	ऽ	ले	ऽ	ताऽ	ऽ	ल	तऽ	माऽ	ऽ	ले	ऽ
×				२				०				३			

		प		प		ग॒									
रे	प	म	प	म	मग॒	रे	सा	रेसा	नि़	सा	–	–	–	–	–
नि	वि	ड़	ति	मि	रऽ	म	य	कुंऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

												रें			
म	प	प	नि	नि	नि	नि	–	पनि	–	सां	रें	नि	–	सां	–
क	ह	रे	ऽ	स	ज	नि	ऽ	एऽ	ऽ	दु	रु	यो	ऽ	गे	ऽ
×				२				०				३			

				सां											
सां	रें	सांरें	सां	नि॒	नि॒	धप	ध	सांनि	–	धप	ध	प	–	–	–
कुं	ऽ	जेऽ	ऽ	नि	र	दऽ	य	काऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

										नि॒		सां			
म	प	प	प	प	प	प	म	प	नि॒	ध	नि॒	नि॒	–	ध॒	प
दाऽ	ऽ	रु	ण	वं	ऽ	शी	ऽ	का	ऽ	हे	ब	जा	ऽ	व	त
×				२				०				३			

प				ध				प							
म	म	प	पध	म	–	पध	मप	ग॒	–	–	–	रे	–	सा	–
स	क	रु	णऽ	रा	ऽ	धाऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ
×				२				०				३			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सानि़ – प़ नि़	नि़ सा सा सा	सानि़ – प़ नि़	नि़ सा सा –
मोऽ ऽ ती ऽ	हा ऽ र से	वेऽ ऽ श ब	ना ऽ दे ऽ
×	२	०	३

		म	
सानि़ – सा रे	रे – रे सा	रेसा रे ग॒ –	– – – –
सींऽ ऽ थि ल	गा ऽ मे रे	भाऽ ऽ ले ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

म म प प	प – प प	म प प पनि॒	पनि॒ नि॒ प प
उ ड़ त वि	लुं ऽ ठि त	लो ऽ ल चिऽ	कुऽ र म म
×	२	०	३

प	म	म	
म – प प	पसां सां ग॒ ग॒म	ग॒ – – म	रे ग॒ सा –
बोँ ऽ ध ह	चऽ मू प कऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ले ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

		नि	रें
म प पनि नि	नि नि नि –	प नि – सांरें	नि – सां –
ग ह नऽ रा	ऽ त में ऽ	न जा ऽ ओऽ	बा ऽ ला ऽ
×	२	०	३

रें			
सां निरें सां नि॒ध	नि॒ – धप ध	सांनि॒ – – ध	प – – –
न वऽ ल किऽ	शो ऽ रऽ के	पाऽ ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

	नि नि॒	रें	रें
पनि॒ नि॒ नि॒ –	ध नि॒ धप ध	ध रें सां रें	नि॒ – ध प
गऽ र जे ऽ	घ न घऽ न	ब हु ड र	पा ऽ व त
×	२	०	३

प	ध	म	
म म – प	– प पध प	ग॒ – – –	रे – सा –
क हे ऽ भा	ऽ तु तऽ व	दा ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौड़मल्हार मिश्र

कहरवा या त्रिताल (मध्यलय)

नमो नमो नमो करुणाघन नमो हे ।
नयन स्निग्ध अमृतांजन सरसे ।
जीवन पूर्ण सुधा रस बरसे ।।
तव दर्शन धन-सार्थक मन हे ।
अकृपण वर्षन करुणा घन हे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

म	रे	म	म	प	प	म	प	पसां	निसां	ध	प	(प)म	प	म	–
न	मो	न	मो	न	मों	क	रु	णाऽ	ऽऽ	घ	न	न	मों	हे	ऽ
×				०				×				०			
–	–	–	ग	रे	ग	रे	–	रे	प	(प)म	–	गरे	ग	रेसा	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	म	हे	ऽ	न	म	हे	ऽ	नऽ	म	हेऽ	ऽ
×				०				×				०			
म	प	प	पनि	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सां	–
न	य	न	स्निऽ	ग्	ध	अ	मृ	ता	न्	ज	न	स	र	से	ऽ
×				०				×				०			
सां	ध	ध	ध	धसां	सां	सां	सां	सां	निरें	सां	सां	निसां	ध	प	–
जी	ऽ	व	न	पूऽ	र	ण	सु	धा	ऽऽ	र	स	बऽ	र	से	ऽ
×				०				×				०			
पर्म	ध	प	प	म	म	म	ग	रे	प	प	प	प	र्म	प	–
तऽ	व	द्	र	श	न	घ	न	सा	र्	थ	क	म	न	हे	ऽ
×				०				×				०			
ध	नि	सां	नि	ध	नि़	ध	प	रे	ग	म	धप	म	ग	रेसा	–
अ	कृ	प	ण	ब	र्	ष	न	क	रु	णा	ऽऽ	घ	न	हेऽ	ऽ
×				०				×				०			
सा	रे	रे	–	रे	प	(प)म	–	गरे	ग	रेसा	–	–	–	–	–
न	मो	हे	ऽ	न	मो	हे	ऽ	नऽ	मो	हेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

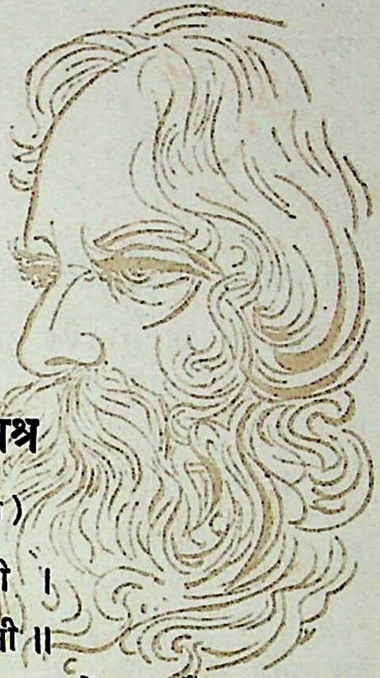

पंचम वसंत मिश्र

कहरवा (मध्यलय)

आज वर्षण मुखरित श्रावण रजनी ।
स्मृति वेदन की माला गाँथू एकाकिनी ॥
आज कौन भ्रम में भूलूँ ।
अंधार घर का यह द्वार खोलूँ ॥
मानो वह आ रहा है ।
मेरा साथी, यह दुख यामिनी ॥
आरहा वह, धारा जल में, सुर लगाये ।
नीपवन पुलक जगाये ॥
यदि वह न आये और ।
वृथा आश्वास की डोर ।
धूलि पै फैला मिलन-आसन बीते रे निशीथिनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

														ध	नि
														आ	ज
												०			

सां	सांगं	गं	गंरें	रें	रेंसां	सां	–	म	–	–	–	–	–	–	–
व	रऽ	ष	ण	मु	खऽ	रि	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	म	प	म	ग	म	प	(प)म	ग	रे	सा	–	–	–	–	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	ऽ	ण	र	ज	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सा	सामि	म	म	म	म	म	–	म	प	ग	–	म	ध	ध	–
स्मृ	तिऽ	वे	द	न	की	मा	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	गाँ	थू	ए	ऽ
×				०				×				०			

नि	–	सां	रें	नि	सां	ध	नि
का	ऽ	कि	ऽ	नी	ऽ	"आ	ज"
×				०			

"आज……रजनी" तक पुनरावृत्ति करें।

														सां	रें
														आ	ज
												०			

नि	सां	ध	धनि	नि	–	सां	रें	नि	सां	–	–	–	–	–	सांरें
कौ	ऽ	न	भ्रम	में	ऽ	भू	ऽ	लूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आँऽ
×				०				×				०			

नि	सां	ध	धध	नि	–	सां	रें	नि	सां	ध	नि	सां	–	सां	रें
धा	ऽ	र	धर	का	ऽ	य	ह	दु	वा	र	खो	लूँ	ऽ,	आ	ज
×				०				×				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि सां ध धनि	नि – सां रें	नि सां – –	– – – सांरें
कौ ऽ न भ्रम	में ऽ भू ऽ	लूँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ अँऽ
×	०	×	०
नि सां ध धध	नि – सां रें	नि सां ध नि	सां – – –
धा ऽ र धर	का ऽ य ह	हु वा खो	लूँ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
नि सां सांसां नि	नि निध ध धप	प म म –	– – सां नि
मा नो वह ऽ	आ ऽऽ ऽ रऽ	हा ऽ है ऽ	ऽ ऽ मे रा
×	०	×	०
सां गं गं गं	गंगं मं पं $^{पं}$मं	गं रें सां रें	नि सां ध नि
सा ऽ थी ऽ	यह ऽ दु ख	या ऽ मि ऽ	नी ऽ "आ ज"
×	०	×	०

"आज......रजनी" तक पुनरावृत्ति करें ।

सा साम म म	मम – – –	साम म म म	म प ग –
आ ऽऽ र हा	वह ऽ ऽ ऽ	धाऽ रा ज ल	में ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
म ध ध ध	ध – म –	म ध नि सां	रें रें रेंसां सां
सु र ल गा	ये ऽ ऽ ऽ	नी प व न	पु ल कऽ
×	०	×	०
नि – सां –	– – – –	सां गं गंगं गं	गं मं गंमं पंमं
गा ऽ ये ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	य दि वह ऽ	न ऽ आऽ येऽ
×	०	×	०
$^{पं}$मंपं मं गं –	– – – –	गं मं मं गं	गं रें सां
औ ऽ र ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	वृ था आ ऽ	श्वा स की ऽ
×	०	×	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	ध	ध	सां	-	-	-	सां	सा	साम	म	-	म	-	म	-
डो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	धु	निऽ	पै	ऽ	फै	ऽ	ला	ऽ
×				०				×				०			

(ग) म	म	म	म	म	प	ग	-	म	ध	ध	ध	नि	(सां) सां	(रें) रें	सां
मि	ल	न	आ	स	ऽ	न	ऽ	बी	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ	नि	शि
×				०				×				०			

नि	-	सां	रें	नि	सां	ध	नि
थि	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	"आ	ज"
×				०			

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

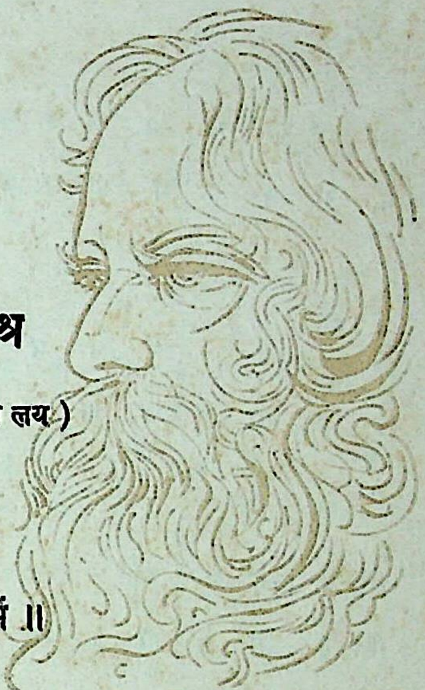

मल्हार मिश्र

कहरवा (मध्य-द्रुत लय)

मेरा मन मेघ का साथी,
उड़ता चले दिगंत की ओर ।
निःसीम शून्य में श्रावण वर्षण संगीत में ॥
रिमिझिम-रिमिझिम-रिमिझिम ॥

मेरा मन हंस-बलाका पंख से उड़ जाये,
कदाचित् चमकित तड़ित आलोक में ।
झन् झन् मंजीर बजाये झंझा घोर आनन्द में,
कल-कल-कल करती निर्झरिणी ।
प्रलय आह्वान पुकारे ॥

वायु बहे पूर्व समुन्दर से,
उच्छ्वल छल-छल नदी की तरंगे ।
मेरा मन दौड़े उस मत्त प्रवाह में,
ताल-तमाल अरण्य में ।
क्षुब्ध शाखायें डोले रे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सा	सा	सा	सा	सा	-	रे	रेसा	रे	प	म	पम	म	ग	-	म
मे	रा	म	न	मे	ऽ	घ	काऽ	सा	ऽ	थी	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

	म														
म	प	प	-	प	प	प	-	पम	नि॒	नि॒	ध	धनि॒	प	प	-
उ	ड़	ता	ऽ	च	लें	दि	ऽ	गऽ	न्	त	की	ओऽ	ऽ	र	ऽ
×				०				×				०			

प															
सां	-	सां	सां	सां	-	सा	सा	सा	-	रे	सा	रे	रे	ग	रे
निः	ऽ	सी	म	शू	ऽ	न्य	में	आ	ऽ	व	न	व	र	ष	ण
×				०				×				०			

								रे		रे		रे		रे	
ग	म	प	प	ग	म	रे	-	म	रे	म	रे	म	रे	म	रे
सं	ऽ	गी	त	में	ऽ	ऽ	ऽ	रि	मि	झि	म	रि	मि	झि	म
×				०				×				०			

म	म	प	-	-	-	-	प
रि	मि	झि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म
×				०			

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

				प								नि			
म	प	प	प	नि॒	प	नि	नि	नि	-	सां	रें	सां	प	प	प
मे	रा	म	न	हं	ऽ	स	ब	ला	ऽ	का	ऽ	पं	ऽ	ख	से
×				०				×				०			

										नि				नि	
नि	नि	नि	-	सां	-	-	-	सां	सां	रें	सां	सां	सां	रें	सां
उ	ड़	जा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	क	दा	चि	त	क	दा	चि	त
×				०				×				०			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नि															
सां	नि̱	नि̱	नि̱	ध	–	नि̱	ध	प	–	पध	म	प	–	–	–
च	म	कि	त	त	ऽ	ड़ि	त	जा	ऽ	लोऽ	क	में	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

										गं					
गं̱	गं̱	गं̱	गं̱	गं̱	–	गं̱	गं̱	गं̱	मं	मं	मं	रें	–	सां	–
झ	न्	झ	न्	मं	ऽ	जी	र	ब	ऽ	जा	ये	झं	ऽ	झा	ऽ
×				०				×				०			

सां				सां				सां	रें	सां	रें	सां	रें		
रें	–	सां	सां	रें	रें	सां	सां	रें	सां	रें	सां	रें	सां	सां	सां
घो	ऽ	र	आ	न	न्	द	में	क	ल	क	ल	क	ल	क	र
×				०				×				०			

नि															
सां	नि̱	नि̱	–	नि̱	ध	प	–	म	म	प	–	प	प	प	म
ती	ऽ	नि	ऽ	झँ	रि	णी	ऽ	प्र	ल	य	ऽ	आ	ह्	वा	न
×				०				×				०			

				म			
प	म	प	म	सां	–	–	–
पु	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

म	म	प	म	प	प	ध	म	प	प	ध	म	प	–	–	–
वा	यु	ब	हे	पु	र	ब	स	सु	न्	द	र	से	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

						नि̱					ध				
प	नि̱	नि̱	नि̱	ध	धनि̱	ध	पध	म	प	सपध	प	म	प	मग̱	म
उ	ऽ	च्छ	त	छ	लऽ	छ	लऽ	न	दी	कीऽऽ	त	रं	ऽ	गेंऽ	ऽ
×				०				×				०			

				प											
म	प	प	प	नि̱	प	पनि̱	प	नि	–	नि	प	नि	–	सां	सां
में	रा	म	न	दौ	ड़े	उऽ	स	म	ऽ	त्त	प्र	वा	ऽ	ह	में
×				०				×				०			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि	सां	रें	रें	रें	मंगं	रें	सांरें	नि	-	सां	सां	-	-	-	-
ता	ऽ	ल	त	मा	ऽऽ	ल	अऽ	र	ऽ	एथ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सां	रें	रें सां	सां	नि सां	ध	ज्ञि	ध	ज्ञि	ध	ज्ञि	ध	ज्ञि	-	प	ध
छु	बू	ध	शा	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यें
×				०				×				०			

म	-	पम	पम	पसां	-	-	-
डो	ऽ	लेऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			

प्रथम चार पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

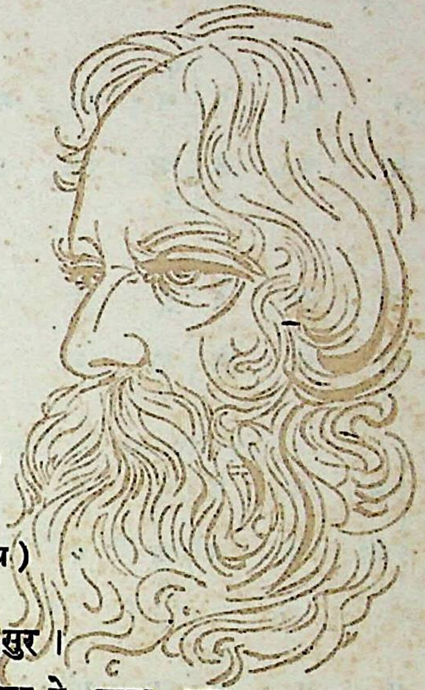

पीलू मिश्र

दादरा (मध्यलय)

बादल धारा चली गई बाजे विदा का सुर ।
गान अपना शेष कर दे जाना बहुत दूर ॥
नाव तेरी आगे बढ़ी,
तरंगों से उलझ पड़ी ।
डोले नैया होले होले लहरें बड़ी चतुर,
कदम-केशर बिखर गया वन उपवन में ।
भौंरे आज राह भूले भटके निराश में ॥
वन में आज चुप है हवा,
आकाश भी आज धूसर हुआ ।
आलोक में आज झलक उठी स्मृति अति मधुर ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

			प			प	म		ग॒		
प	प	प	म	पध	मप	म	ग॒	–	रे	मग॒	रे
बा	द	ल	धा	राऽ	ऽऽ	च	ली	ऽ	ग	ईऽ	ऽ
×			०			×			०		

						रे					
सा	सा	रे	ग॒	ग॒	रे	सां	–	–	–	–	सा
बा	जे	वि	दा	का	ऽ	सु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०			×			०		

						ध					
म	प	प	प	प	ध	प	सां	सांनि॒	ध	प	–
गा	ऽ	न	अ	प	ना	शे	ष	कऽ	र	दे	ऽ
×			०			×			०		

		ध									
प	ध	प	म	गरे	ग	गम	–	–	–	–	–
शे	ष	क	र	देऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

	प		म								
मप	म	–	ग॒	ग॒	रे	मग॒	–	–	रे	सा	रे
जाऽ	ना	ऽ	ब	हु	त	दूऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०			×			०		

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

प	प	प	प	प	–	प	प	ध	नि॒	सां	निरें
ना	ऽ	व	ते	री	ऽ	आ	ऽ	गे	ब	ढ़ी	ऽऽ
×			०			×			०		

रें		सां					ध		प		
सां	सां	नि॒	ध	प	–	पध	प	प	म	ग,	रेग
त	रं	ऽ	गों	से	ऽ	उऽ	ल	झ	प	ड़ी	ऽऽ
×			०			×			०		

						सा			ग॒		
गम	–	–	–	–	ग॒	ग॒	ग॒	–	रे	ग॒	ग॒
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	डो	ले	ऽ	नै	ऽ	या
×			०			×			०		

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

ग			ग								
रे	ग	–	रे	मग	रे	सा	सा	रे	ग	ग	रे
हो	ले	ऽ	हो	लेऽ	ऽ	ल	ह	रें	ब	ड़ी	च
×			०			×			०		

रे											
सा	–	–	–	–	सा						
तु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र						
×			०								

"गान अपना शेष कर दे,……बादल धारा……दूर" तक पुनरावृत्ति करें ।

सा											
नि़	नि़	नि़	नि़	प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	रेसा
क	द	म	के	श	र	बि	ख	र	ग	या	ऽऽ
×			०			×			०		

सा				नि़							
नि़	नि़	–	नि़	प़	नि़	नि़	सा	–	सा	–	–
व	न	ऽ	उ	प	ऽ	व	न	ऽ	में	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

			ग			ग			ग		
सा	ग	ग	रे	ग	ग	रे	ग	ग	रे	मग	रे
भौं	ऽ	रे	आ	ऽ	ज	रा	ऽ	ह	भू	ऽऽ	ले
×			०			×			०		

सारे	सा	रे	रे	मग	रे	सारे	सा	–	–	–	–
भऽ	ट	के	नि	राऽ	श	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	प	प	प	–	प	प	प	ध़	नि	सां	निरें
व	न	में	आ	ऽ	ज	चु	प	है	ह	वा	ऽऽ
×			०			×			०		

रें			नि				ध		प		
सां	नि	नि	ध	प	प	पध	प	म	म	ग	रेग
आ	का	श	भी	आ	ज	धूऽ	स	र	हु	ऽ	आऽ
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	–	–	–	–	–	(म) ग॒	ग॒	ग॒	(ग॒) रे	ग॒	ग॒
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	लो	क	में	आ	ज
×			०			×			०		

(ग॒) रे	ग॒	ग॒	(ग॒) रे	मग॒	रे	सारे	सा	रे	ग॒	ग॒	रे
झ	ल	क	उ	ठीऽ	ऽ	स्मृऽ	ति	ऽ	अ	ति	म
×			०			×			०		

(रे) सा	–	–	–	–	सा
धु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

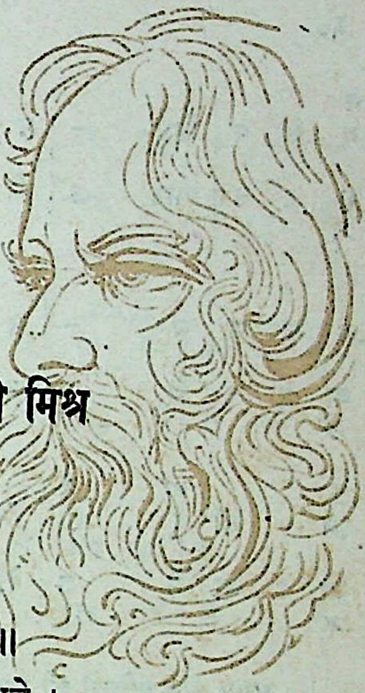

कालिंगड़ा–रामकली मिश्र

* रूपकड़ा (मध्यलय)

शरत आलोक के कमल वन में ।
बाहर होकर विहार करे,
जो था मेरे मन ही मन में ॥
सोने के कंकन उसके बाजे ।
आज प्रभात किरन में राजे ॥
हवा से काँपे आँचल उसका,
फैले छाया क्षण–क्षण में ॥
आकुल केश के परिमल में ।
शेफाली वन की उदास वायु,
पड़ी रहे तरु तले ॥
हृदय में देखो हृदय डोले ।
बाहर हो वह भुवन को भूले ॥
आज उसने निज नयनों की दृष्टि,
फैला दी नील गगन में ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म			प		म
ग म प	त्रिध –	प प ध॒	म प ध॒	मप ध॒प	ग – –
श र त	आऽ ऽ	लो क के	क म ल	वऽ ऽन	में ऽ ऽ
×			×		

			म		
ग म म	म –	म म –	ग म प	गम पध॒	ध॒ – –
बा ह र	हो ऽ	क र ऽ	बि हा र	कऽ ऽऽ	रे ऽ ऽ
×			×		

ध॒	सां रें		रें	नि	
नि – सां	रें॒ सां	निसां ध॒ –	ध॒ रें॒ सांनि	ध॒ ध॒	प – मग
जो ऽ था	मे ऽ	रेऽ ऽ ऽ	म न हीऽ	म न	में ऽ ऽऽ
×			×		

प्रथम तीन पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

	प	ध॒	नि ध॒	नि	
ध॒ ध॒ ध॒	ध॒ –	सां – नि	ध॒ सां नि	ध॒ –	प – –
सो ने के	कं ऽ	क ऽ न	उ स के	बा ऽ	जे ऽ ऽ
×			×		

प					
म ध॒ ध॒	पध॒ त्रिध॒प	म ग ग	म त्रिध॒ –	नि –	सां –
आ ज प्र	भाऽ ऽऽऽ	त कि र	ण मेंऽ ऽ	रा ऽ	जे ऽ
×			×		

			गं मं	गं	
सांगं॒ गं॒ गं॒	गं॒ रें	गं॒ – –	मं गं॒ गं॒	रें॒ रें॒	सां – –
हऽ वा से	काँ ऽ	पे ऽ ऽ	आँ च ल	उ स	का ऽ ऽ
×			×		

सां				नि	
रें॒ सां –	त्रि ध॒	ध॒ प –	प पध॒ सांनि	ध॒ ध॒	प – मग
फै ले ऽ	छा ऽ	या ऽ ऽ	क्ष णऽ ऽऽ	क्ष ण	में ऽ ऽऽ
×			×		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

---

* यह कवि रवीन्द्रनाथ द्वारा सृष्ट आठ मात्रा की (३।२।३) ताल है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा रे म	म –	म म –	(म)ग म –	गम पधु	धु – –
आ कु ल	के ऽ	श के ऽ	प रि ऽ	मऽ ऽल	में ऽ ऽ
×			×		

(ध)नि नि सां	(सां)रें –	(रें)सां – सां	नि सां सां	सां नि	सां – नि
शे फा ली	व ऽ	न ऽ की	उ दा स	वा ऽ	यु ऽ ऽ
×			×		

(सां)नि नि धु	धु –	प – धु	(धु)म प धु	मप धुप	(म)ग – –
प ड़ी ऽ	र ऽ	हे ऽ ऽ	त रु ऽ	तऽ ऽऽ	ले ऽ ऽ
×			×		

धु धु धु	नि –	सां सां –	(सां)रें रें सां	रेंसां नि	सां – –
हृ द य	में ऽ	दे खो ऽ	हृ द य	डोऽ ऽ	ले ऽ ऽ
×			×		

सां गं गरें	(मं)गं –	रें सां –	(सां)नि सांसां रेंसां	(नि)सां नि	धु – –
बा ह रऽ	हो ऽ	व ह ऽ	भु वन कोऽ	भू ऽ	ले ऽ ऽ
×			×		

ध(सां)सां नि सां	(सां)रें सां	सां – –	(सां)रें सां निनि	(सां)नि –	धु प –
आऽ ऽ ज	उ स	ने ऽ ऽ	नि ज नय	नों ऽ	की ऽ ऽ
×			×		

(प)गं – गंरें	(मं)गं –	रें सां –	सा रे ग	म प	निधु – –
छ ऽ छिऽ	फै ऽ	ला दी ऽ	नी ल ग	ग न	मेंऽ ऽ ऽ
×			×		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

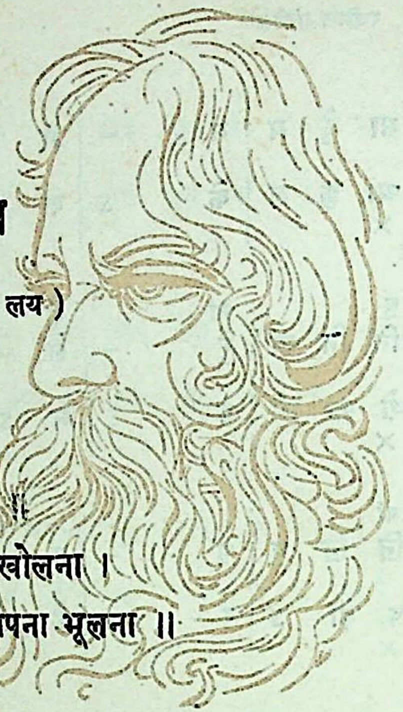

बहार मिश्र

त्रिताल (मध्य-द्रुत लय)

आज वसंत जाग्रत द्वार रे ।
तव अवगुंठित कुंठित जीवन में,
उसे विडम्बित ना कर रे ।।
आज खोलना हृदय-दल खोलना ।
आज भूलना-पराया-अपना भूलना ।।
इस संगीत मुखरित गगन में,
तेरी गंध की लहरें उड़ना ।
इस भुवन की दिशाओं में आना ।
देना फैला माधुरी भार रे ।।
अति निविड़ वेदना वन में रे ।
आज पल्लव-पल्लव में बाजे रे ।।
दूर गगन में किस की राह देखे ।
आज व्याकुल वसुंधरा साजे रे ।।
मेरे मनमें दखिन वायु लगी है ।
किस द्वार-द्वार कर फैला माँगे है ।।
यह सौरभ विह्वल रजनी ।
तुम चरणों धरणीतल जागा है ।।
ओहे सुन्दर वल्लभ कान्त ।
तव गंभीर आह्वान किसको रे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

			त्रि ध
			आ ज
			३

ध ध			
त्रि त्रि प म	पधप - मग॒ म	नि - - सां	ध सांनि सां त्रि
व सं ऽ त	जाऽऽ ऽ ग्रऽ त	द्वा ऽ ऽ ऽ	ऽ रऽ रे ऽ
×	२	०	३

ध ध			
त्रि त्रि प म	पधप - मग॒ म	त्रि - ध त्रिध	प सांनि सां त्रि
व सं ऽ त	जाऽऽ ऽ ग्रऽ त	द्वा ऽ ऽ ऽऽ	ऽ रऽ रे ऽ
×	२	०	३

		सां	सां
ध नि नि सां	सां सां सां सां	नि सांरें सां सां	त्रि सां त्रि धत्रि
त व अ व	गुं ऽ ठि त	कुं ऽऽ ठि त	जी व न मेंऽ
×	२	०	३

	म	म	
प पसां ध प	ग॒ - मग॒ म	त्रि - ध त्रिध	प सांनि सां -त्रि
ऊ सेंऽ ऽ वि	ड ऽ म्बि त	ना ऽ ऽ ऽऽ	ऽ कर रे ऽऽ
×	२	०	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें ।

			ध नि
			आ ज

	नि		
नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां -	-, - सां सां
खो ल ना हृ	द यऽ द लऽ	खो ल ना ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

सां		सां	
नि सां रें रें	रें रेंग॒ रें सांरें	नि - सां सांरें	सां त्रि, ध धनि
भू ल ना प	रा याअ प नाऽ	भू ऽ ऽ लऽ	ना ऽ, आ जऽ
×	२	०	३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	नि		
नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां –	– – सां सां
खो ल ना ह्र	द्‌ यऽ द्‌ लऽ	खो ल नाऽ ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३
सां		सां	
नि सां रें रें	रें रेंगं रें सांरें	नि – सां सांरें	सां त्रि, धत्रि प
भू ल न प	रा यात्रा प नाऽ	भू ऽ ऽ लऽ	ना ऽ, इऽ स
×	२	०	३
म	म	ग	
सां – त्रि पम	प प मग ग	म – रे रे	सा – सा साम
सं ऽ गी तऽ	मु ख रिऽ त	ग ऽ ग न	में ऽ ते रीऽ
×	२	०	३
ग		म	
म – म म	पधप प मग म	त्रि – पध सांनि	सां –त्रि ध त्रि
गं ऽ ध की	लऽऽ ह रेंऽ उ	ड़ा ऽ ऽऽ ऽऽ	ना ऽऽ, इ स
×	२	०	३
गं गं गं गं	गं गं मं पं	मंपं मं गं –	– – गं गं
भु व न की	दि शा ओं में	आऽ ऽ ना ऽ	ऽ ऽ दे ना
×	२	०	३
गं मं मं मं	गं रें सां निसां	ध सां नि रें	सां – त्रि ध
फै ऽ ला मा	धु री भा रऽ	भा ऽ ऽ र	रे ऽ, "आ ज"
×	२	०	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

			सा म
			अ ति
		ग	
म म म म	म म म म	म प म –	– – म म
निं वि ड़ वे	द ना व न	में ऽ रे ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

म प प प	म प म ग॒	म ध प नि॒	ध - सा साम
प ल् ल व	प ल्ल व में	बा ऽ जें ऽ	रे ऽ, अ तिऽ
×	२	०	३

म म म म	म म म म	म (ग)प म -	- - म म
नि वि ड़ वे	द ना व न	में ऽ रे ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

म प प प	म प म ग॒	म ध प नि॒	ध - ध धनि
प ल् ल व	प ल्ल व में	बा ऽ जे ऽ	रे ऽ, दू रऽ
×	२	०	३

नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां सां	सां -, सां सां
ग ग न में	कि सऽ की ऽऽ	रा ऽ ह दे	खे ऽ, आ ज
×	२	०	३

(सां)नि॒ सां नि॒ध प	(म)ग॒ - म प	ग॒ म (म)ग॒ रे	सा - ध नि
व्या कु लऽ व	सुं ऽ ध रा	सा ऽ जे ऽ	रे ऽ, मे रे
×	२	०	३

नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां -	- - सां सां
म न में द	खि नऽ वा युऽ	ल गी है ऽ	ऽ ऽ कि स
×	२	०	३

(सां)नि सां रें रें	रें रेंग॒ं रें सांरें	(सां)नि - सां सांरें	सां नि॒, ध नि
द्वा र द्वा र	क रऽ फै लाऽ	माँ ऽ गें ऽऽ	हैं ऽ, मे रे
×	२	०	३

नि सां सां सां	सां सांनि रेंसां रें	नि नि सां -	- - सां सां
म न में द	खि नऽ वा युऽ	ल गी है ऽ	ऽ ऽ कि स
×	२	०	३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(सां) नि सां रें रें	रें रेंग॒ रें सांरें	(सां) नि - सां सांरें	सां नि॒, धनि॒ प
द्वा र द्वा र	क रऽ फै लाऽ	माँ ऽ गे ऽऽ	है ऽ, यऽ ह
×	२	०	३

(प) सां - नि॒ पम	(म) प - मग॒ ग॒	ग॒ म रे -	सा - सा म
सौ ऽ र भऽ	वि ऽ ह्वऽ ल	र ऽ ज ऽ	नी ऽ उ स
×	२	०	३

म म म म	मध प मग॒ म	(म) नि॒ -ध पसां नि	सां -नि॒ ध नि॒
च र णों ध	रऽ नी तऽ ल	जा ऽऽ ऽऽ गा	है ऽऽ, ओ हे
×	३	०	३

सां गं गं गं	गं गं गं मंपं	मं - - गंमंपं	मं गं गं गं
सु न् द् र	व ल् ल भऽ	का ऽ ऽ ऽऽन्	त ऽ त व
×	२	०	३

गं मं मं मं	गं रें सां निसां	ध सां नि रें	सा - पध ध ∧
ग म् भी र	आ ऽ ह्वा नऽ	कि स को ऽ	रे ऽ "आऽ ज" |
×	२	०	३ V

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

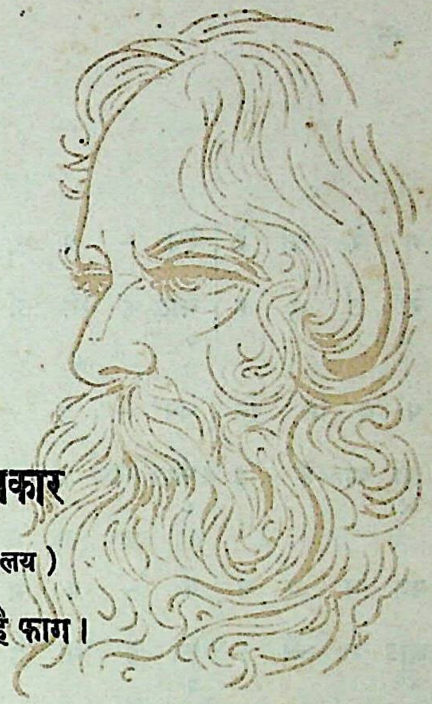

कल्याण प्रकार

कहरवा (द्रुतलय)

ओरे गृहवासी, जाग अब जाग, छाया है फाग।
स्थल-जल वन में छाया-जो-फाग
जाग-अब जाग ॥
लाल हँसी राशि-राशि अशोक पलाश में,
लाल-नशा मेघ छाये प्रभात आकाश में।
नव तरु दलों लगे लाल झटक झाग ॥
वेणु वन मर-मर दखिन वातास में।
तितलियाँ नाचे घास घास में ॥
मधुमाछी माँगती फिरे फूल दखिना,
पाँखो से बजाये निज भिक्षुक वीणा।
माधवी निकुंज वायु मत्त अनुराग ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

			सा रे
			ओ ऽ

ग रे सा रे	रेध – प –,	सा ध ध ध	प ध नि धप
रे ऽ गृ ह	वाऽ ऽ सी ऽ,	जा ग अ ब	जा ऽ ऽ . ऽग
×	०	×	०

प ध नि नि	धप – प –	सां सां नि नि	पध ध ध ध
छा या है ऽ	फाऽ ऽ ग ऽ	स्थ ल ज ल	वऽ न में ऽ
×	०	×	०

पध ध ध ध	प – प म	ग ग ग रे	सा सा, सा रे
छाऽ या जो ऽ	फा ऽ ग ऽ	जा ग अ ब	जा ग, "ओ ऽ"
×	०	×	०

"ओरे गृहवासी जाग अब जाग" तक पुनरावृत्ति करें।

प ग प प	प ध प ध	(ध) सां सां सां सांनि	रेंसां – सां सां
ला ल हँ सि	रा शि रा शि	अ शो क पऽ	लाऽ ऽ श में
×	०	×	०

सां रें गं गं	रें रें सां सां	निरें रें सां सां	धनि – (ध)प प
ला ल न शा	मे घ छा ये	प्रऽ भा त आ	काऽ ऽ श में
×	०	×	०

गं गं गं रें	रें रें सां सां	सा सा सा रेरे	ग – सा रे
न व त रु	द़ लों ल गे	ला ल झ टक	झा ऽ ग ऽ
×	०	×	०

ग ग ग रे	सा सा, सा रे		
जा ग अ ब	जा ग, "ओ ऽ"		
×	०		

"ओरे गृहवासी……फाग" तक पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा धृ सा सा | सा सा सा रे | ग ग ग ग | ग - ग रे
वे णु व न | म र् म र् | द खि न वा | ता ऽ स में
× | ० | × | ०

ग गध ध ध | प मंप ग रे | ग रे सा - | - - - -
ति तऽ लि याँ | ना चेऽ घा स | घा स में ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

प ग प ध | प ध प ध | धसां सां सां सांनि | रेंसां - सां -
म धु मा छी | माँ ग ती फि | रेऽ फू ल दऽ | खि ऽ ना ऽ
× | ० | × | ०

सांगं गं गं रें | रें रें सां सां | निरें रें सां सांनि | धनि - धप -
पाँऽ खों से .ब | जा ये नि ज | भि ऽ छु कऽ | वीऽ ऽ णाऽ ऽ
× | ० | × | ०

गं गं गं गं | रें रें सां सां | सा - सा रेरे | ग ग सा रे
मा ध वी नि | कुं ज वा यु | म ऽ त्त अनु | रा ऽ ग ऽ
× | ० | × | ०

ग ग ग रे | सा सा सा रे | |
जा ग अ ब | जा ग "ओ ऽ" | |
× | ० | |

"ओरे गृहवासी·····फाग" तक पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

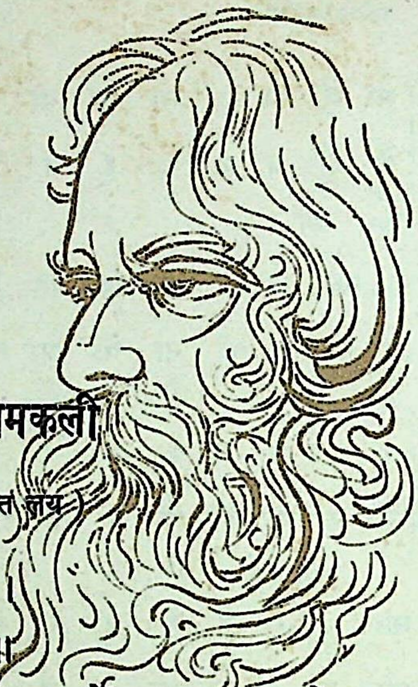

कालिंगड़ा–रामकली

कहरवा (मध्य-द्रुत लय)

अरी वधू सुन्दरी तुम मधु मंजरी ।
पुलकित चंपा का लो अभिनन्दन ।।
पर्ण के पात्र में फागुन रात में ।
मुकुलित मल्लिका माला बंधन ।
लाया हूँ वसंत की गंध सुहानी ।
पलाश कुमकुम चांद का चंदन ।।
पारुल का हिल्लोल, शिरीष का हिन्दोल ।
मंजुल वल्ली के बंकिम कंगन ।।
उल्लास चंचल वेनुवन कल्लोल ।
मलय का कंपित किशलय चुम्बन ।।
तेरी आंखों में लगा नयनों में ।
गगन की नीलिमा स्वप्न का अंजन ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

म	म	ग	म	प	–	म	प	निध	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	ब	धू	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
प	ध	ध	प	म	प	ध	प	मग	–	–	–	–	–	–	–
तु	म	म	धु	मं	ऽ	ऽ	ज्ञ	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
ग	म	ग	रे	ग	ग	म	म	म	प	म	ग	म	नि	नि	नि
पु	ल	कि	त	च	म्	पा	का	लो	ऽ	अ	भि	न	न्	द	न
×				०				×				०			
(नि)ध	प	मग	म	प	–	म	प	निध	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	बऽ	धु	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
नि	नि	सां	सां	रें	–	सां	सां	नि	–	सां	सां	(नि)सां	नि	(नि)ध	प
प	र्	ण	के	पा	ऽ	त्र	में	फा	ऽ	गु	न	रा	ऽ	त	में
×				०				×				०			
प	ध	नि	ध	प	प	ध	प	म	–	प	–	पध	प	म	ग,
मु	कु	लि	त	म	ल्	लि	का	मा	ऽ	ला	ऽ	बंऽ	ऽ	ध	न,
×				०				×				०			
ग	ग	ग	म	प	ऽ	म	प	निध	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	ब	धू	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
ध	ध	ध	ध	नि	नि	सां	सां	रें	–	रें	सां	(सां)नि	नि	सां	सां
ला	या	हूँ	ब	स	न्	त	की	गं	ऽ	ध	सु	हा	ऽ	नी	ऽ
×				०				×				०			
(सां)गं	गं	गं	रें	गं	गं	गं	गं	सां	रें	गं	गं	रेंगं	रें	सां	सां
प	ला	ऽ	श	कु	म	कु	म	चाँ	ऽ	द	का	चं	ऽ	द	न
×				०				×				०			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सांमं	मं	मं	मं	मं	मं	पं	मं	गं	रें	गं	रें	गं	रें	गं	मं
पाऽ	रु	ल	का	हि	ल्	लो	ल	शि	री	ष	का	हि	न्	दो	ल
×				०				×				०			

गं	गं	गं	गं	रें	रें	रें	रें	सां	–	सां	सां	नि	–	नि	नि
मं	ऽ	जु	ल	व	ल्	ली	के	वं	ऽ	किं	म	कं	ऽ	ग	न
×				०				×				०			

ध	प	मग	म	प	–	म	प	निध	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	बऽ	धू	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सा	म	म	म	म	प	मप	ध	प	म	ग	रे	ग	रे	ग	म
उ	ऽ	ल्ला	स	च	न्	चऽ	ल	वे	नु	व	न	क	ल्	लो	ल
×				०				×				०			

ग	ग	रे	सा	सा	रे	ग	म	ग	म	(म)ग	ग	रे	–	सा	सा
म	ल	य	का	क	म्	पि	त्	कि	श	ल	य	चु	म्	ब	न
×				०				×				०			

ध	ध	नि	सां	(सां)रें	–	रें	नि	सां	–	–	–	–	–	–	–
ते	री	आँ	ऽ	खों	ऽ	ऽ	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध	ध	नि	सां	सांगं	–	रें	सां	ध	नि	सां	रें	रें	नि	सां	–
ल	गा	न-	य	नोंऽ	ऽ	में	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सां	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	नि	सां	नि	नि	ध	ध	प	प
ग	ग	न	की	नी	लि	मा	ऽ	स्व	प्	न	का	अं	ऽ	ज	न
×				०				×				०			

म	ग	म	म	प	प	मं	प	निध	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	ब	धू	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

प्रति विराम स्थल के बाद "अरी बधू.........
अभिनन्दन" तक पुनरावृत्ति कर सकते हैं।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

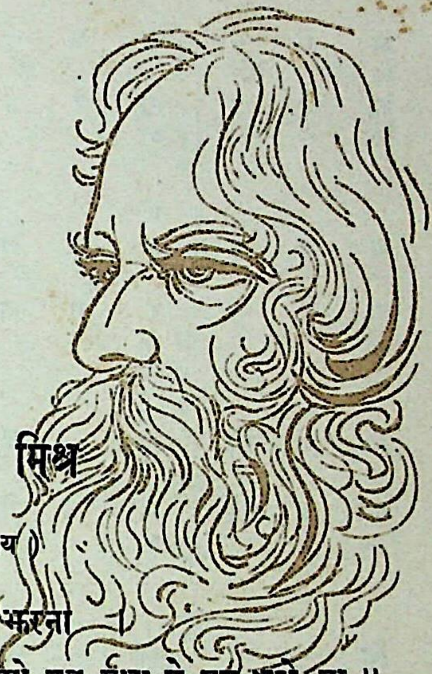

बहार अड़ाना मिश्र

दादरा (मध्यलय)

झरे–झरे–झरे–झरे–झरे रंग का झरना ।
आओ आओ रे, आओ उस सुधा से मन भरो–ना ।।
वे मुक्त प्लावित धारायें चित्त मृत्यु आवेश खोयें ।
उस रस का परस पाके धरा नित्य नवीन बरना ।।
वह कलध्वनि दखिन हवा फैलाये गगनमय ।
मर–मर ध्वनि करते आये नवीन किशलय ।
छन्द जागे वन की वीणाओं में वसंत पंचम राग में ।
उस स्वर में तू सुर लगा आनन्द गान करो ना ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	म	–	म	म	–	म	म	–	म	म	–
झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ
×			०			×			०		

			ध					ध			
म	प	ध	प	म	ग	म	ध	प	ध	–	नि,
झ	रे	ऽ	रं	ग	का	झ	ऽ	र	ना	ऽ	ऽ,
×			०			×			०		

						रें					
नि	–	नि	निसां	–	रें	नि	सां	त्रि	ध	–	नि
आ	ऽ	ओ	आऽ	ऽ	ओ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

						सां				रें	
नि	–	सां	सां	–	सां	नि	सां	–	सांरें	सां	सां
आ	ऽ	ओ	उ	ऽ	स	सु	धा	ऽ	सेऽ	म	न
×			०			×			०		

सां						
नि	नि	–	निसां	–	–	∧
भ	रो	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ	∨
×			०			

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

										ध	नि
										वे	ऽ

										रें	
नि	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	–	सांरें	सां	नि
मु	ऽ	क्त	सा	वि	त	धा	ऽ	ऽ	राऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

						सां					
निसां	–	–	सां	–	सां	नि	–	सां	रें	रें	रें
यें	ऽ	ऽ	चि	ऽ	त्त	मृ	ऽ	त्यु	आ	वे	श
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

									गुं		
रें	-	सां	रें	-	गुं	गुं	-	-	रें	सां	सां
खो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यें	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×			०			×			०		

सां				रें			सां				
नि	सां	सां	सांरें	सां	सां	सां	त्रि	त्रि	ध	प	-
र	स	का	पऽ	र	स	पा	ऽ	के	ध	रा	ऽ
×			०			×			०		

		ध						सां			
प	ध	प	म	ग	म	प	सां	त्रि	त्रिसां	-	-
नि	ऽ	त्य	न	वी	न	ब	ऽ	र	णाऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

										सा	म
										व	ह

म	म	-	म	म	-	म	म	म	म	म	-
क	ल	ऽ	ध्व	नि	ऽ	द	खि	न	ह	वा	ऽ
×			०			×			०		

				ग		प					
साम	म	म	म	म	प	म	-	-	-	-	म
फैऽ	ला	ये	ग	ग	न	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
×			०			×			०		

म	प	प	प	प	प	प	प	ध	ध	-	ध
म	र्	म	र्	ध्व	नि	क	र	ते	आ	ऽ	ये
×			०			×			०		

									सां		
ध	ध	त्रि	त्रि	त्रि	सां	सां	-	रेंसां	नि	सां	ध
न	वी	न	कि	श	ऽ	ल	ऽ	यऽ	आ	ऽ	ये
×			०			×			०		

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	ध	नि̲	नि̲	नि̲	सां	सां	–	सां	(सां)नि	सां	ध
न	वी	न	कि	श	ऽ	ल	ऽ	यऽ	छ	न्	द
×			०			×			०		
ध	ध	–	ध	ध	नि	नि	सां	सां	(सां)नि	–	सां
जा	गे	ऽ	व	न	की	वी	णा	ऽ	ओं	ऽ	में
×			०			×			०		
(सां)नि	सां	सां	रें	रें	रें	रें	रें	रें	रें	सां	रें
व	स	न्	त	पं	ऽ	च	म	ऽ	रा	ऽ	ग
×			०			×			०		
रेंगं̲	–	–	(गं̲)रें	सां	सां	ध	ध	–	ध	ध	नि
मेंऽ	ऽ	ऽ	छ	न्	द	जा	गे	ऽ	व	न	की
×			०			×			०		
नि	सां	सां	(सां)नि	–	सां	(सां)नि	सां	सां	रें	रें	रें
वी	णा	ऽ	ओं	ऽ	में	व	स	न्	त	पं	ऽ
×			०			×			०		
रें	रें	रें	रें	सां	रें	रेंगं̲	–	–	गं̲रें	सां	सां
च	म	ऽ	रा	ऽ	ग	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×			०			×			०		
(सां)नि	सां	सां	सांरें	(रें)सां	–	(सां)नि̲	सां	नि̲	ध	(ध)प	–
सु	र	में	ऽऽ	तू	ऽ	सु	ऽ	र	ल	गा	ऽ
×			०			×			०		
पध	(ध)प	प	म	ग	म	प	सां	(सां)नि	निसां	–	–
आऽ	न	न्	द	गा	न	क	रो	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

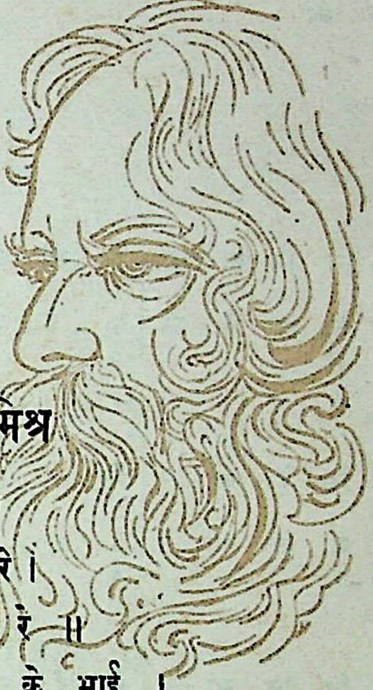

अड़ाना–बहार, मिश्र

कहरवा (द्रुतलय)

अरे आओ रे अब तो मतवारें, झूमें रे ।
आज नव–जीवन का बसंत रे ।।
प्राचीन बंधन तोड़ के भाई ।
चलो वेग से मेरे राही ।।
अपने को तू दिगंत में खोदे ।
भूल जा तेरे गम सारे ।।
बंधन जितने तोड़ उन्हें तू आनन्द से ।
आज नव जीवन का बसंत रे ।।
अकुल प्राण के सागर तीर पर ।
किसका तुझ को है रे डर ।।
अपना सब कुछ साथ लिये तू ।
चल दे दूर दिशा में रे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

														ध	नि
														अ	रे

														रें	
नि	नि	सां	रेंसां	नि	सां	ध	नि	नि	नि	सां	−	नि	रें	सां	−
आ	ओ	रे	ऽऽ	ऽ	ऽ	अ	रे	आ	ओ	रे	ऽ	अ	ब	तो	ऽ
×				०				×				०			

		रें			—							रें			
नि	रें	सां	−	ऩि	−	ध	ऩि	प	सां	सां	नि	सां	−	ध	नि
म	त	वा	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	झू	ऽ	में	ऽ	रे	ऽ	आ	ज
×				०				×				०			

						रें									
नि	नि	सां	−	नि	रें	सां	−	सा	म	म	म	म	प	प	ध
न	व	जी	ऽ	व	न	का	ऽ	व	स	न्	त	रे	ऽ,	अ	रे
×				०				×				०			

नि	नि	सां	रेंसां	नि	सां	ध	नि	नि	नि	सां	−	−	−	−	−
आ	ओ	रे	ऽऽ	ऽ	ऽ	अ	रे	आ	ओ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

उपरोक्त अंश की पुनरावृत्ति करें।

ध	−	ध	ध	ध	−	ध	नि	नि	नि	सां	सां	रेंसां	नि	सां	−
प्रा	ऽ	ची	न	बं	ऽ	ध	न	तो	ड़	के	ऽ	भा	ऽ	ई	ऽ
×				०				×				०			

															नि
सां	ध	रें	रें	रें	सां	सां	सां	नि	सां	निसां	रें	सां	ऩि	ध	−
च	लो	ऽ	ऽ	वे	ग	से	ऽ	मे	ऽ	रेऽ	ऽ	रा	ऽ	ही	ऽ
×				०				×				०			

सां	मं	मं	मं	मं	ग॒ं	ग॒ं	ग॒ं	गं	पं	पं	मं	मं	ग॒ं	ग॒ं	ग॒ं
अ	प	ने	ऽ	को	ऽ	तू	ऽ	दि	ग	न्त	में	खो	ऽ	दे	ऽ
×				०				×				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

मं (above 3rd)	गुं (above 1st)		
रें मं गुं गुं	रें - सां नि,	ध सां सां नि	सां - ध नि
भू ऽ ल जा	तें ऽ रे ऽ	ग म सा ऽ	रे ऽ आ ज
×	०	×	०

	रें (above 2nd)		
नि नि सां -	नि रें सां सां	सा म म म	म प प ध
न व जी ऽ	व न का ऽ	व सं ऽ त	रे ऽ "अ रे"
×	०	×	०

केवल प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

			सां (above 1st)
सा म म म	म म म प	प सां सां सांसां	नि - ध -
बं ऽ ध न	जि त ने ऽ	तो ऽ ड़ उन्	हें ऽ तू ऽ
×	०	×	०

		रें (above 2nd)	
ध नि पध नि	नि - नि नि	नि रें सां नि	नि ध ध प
आ ऽ नऽ न्द	से ऽ आ ज	न व जी ऽ	व न का ऽ
×	०	×	०

प म मग प	मग - - -		
व ऽ सऽ न्त	रेऽ ऽ ऽ ऽ		
×	०		

ध - ध ध	ध - ध नि	नि - सां सां	रेंसां नि सां सां
अ ऽ कु ल	प्रा ऽ ण के	सा ऽ ग र	तीऽ र प र
×	०	×	०

		रें (above 4th)	सां (above 1st), नि (above {-})
सां ध रें रें	रें सां सां सां	निसां नि रें सां	नि - ध { - }
कि स का ऽ	तु झ को ऽ	हैऽ ऽ रे ऽ	ड ऽ र { ऽ }
×	०	×	०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	सां	मं	मं	मं	ग॒ं	ग॒ं	ग॒ं	ग॒ं	–	पं	पं	मं	–	ग॒ं	ग॒ं
अ	प	ना	ऽ	स	ब	कु	छ	सा	ऽ	थ	लि	ये	ऽ	तू	ऽ
×				०				×				०			
ग॒ं	रें	मं	ग॒ं	रें	रें	सां	नि॒	ध	सां	सां	नि	सां	–,	ध	नि
च	ल	दे	ऽ	दू	ऽ	र	दि	शा	ऽ	में	ऽ	रे	ऽ,	आ	ज
×				०				×				०			
नि	नि	सां	–	नि	रें	(रें) सां	–	सा	म	म	म	म	प	"प	ध"
न	व	जी	ऽ	व	न	का	ऽ	व	स	न्	त	रे	ऽ,	"अ	रे"
×				०				×				०			

"अरे आओरे……आनन्द से" तक गायें।

—— ——

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माँड़ मिश्र

कहरवा (द्रुतलय)

दूर गाँव से मटियाला पथ रे, आहा मेरे मन को भुलाये रे।
अरे किसकी ओर बढ़ा के हाथ, लुटकर मिलगया धूल से रे॥
इसने मुझे घर से बाहर किया है,
किस की चाह में पागल किया है।
आहा रे आहा रे—
राही बन गया इसके साथ मैं, कहाँ कहाँ ले जाय रे॥
जाने कौन देश मुझको ले जाये,
कहाँ–कहाँ क्या खेल दिखाये ।
भेद बताये कैसे कैसे रे इसकी लीला कौन कहे रे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धृ	सा	सा	सा	सा	–	सा	रे	ग	प	प	ध	प	–	म	पम
दू	ऽ	र	गाँ	व	ऽ	से	ऽ	म	टि	या	ऽ	ला	ऽ	प	थऽ
×				०				×				०			

म															
ग	–	–	–	–	–	–	–	ग	–	–	म	प	–	–	धप
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ.	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ
×				०				×				०			

												म			
म	–	–	पम	ग	–	सा	रे	ग	ग	ग	म	ग	–	रे	गरे
हा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	मे	रे	म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽऽ
×				०				×				०			

सा	–	–	–	–	–	{प / –}	{ध / –}	प	ध	सां	सां	रें	–	सां	सां
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	{ऽ / अ}	{ऽ / रे}	कि	स	की	ऽ	ओ	ऽ	र	ब
×				०				×				०			

		सां		नि											
सां	–	सां	नि	ध–	–प	ध	भ	ध	प	–	–	–	–	–	प
ढ़ा	ऽ	कें	ऽ	हाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	थ
×				०				×				०			

				सां											
ध	ध	ध	सां	ध	ध	प	ध	म	प	प	म	ग	–	सा	रे
लु	ट	क	र	मि	ल	ग	या	धू	ऽ	ल	से	रे	ऽ	मे	रे
×				०				×				०			

				म											
ग	ग	ग	म	ग	–	रे	ग	रेसा	–	–	–	–	–	–	–
म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

														ध	
धृ	सा	सा	सा	सा	–	सा	रे	ग	प	पृ	प	प	ध	प	धप
इ	स	ने	ऽ	मु	ऽ	झे	ऽ	घ	र	से	ऽ	बा	ऽ	ह	रऽ
×				०				×				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प															
म	–	मग	पम	ग	–	–	–	ग	ग	ग	म	प	–	प	ध
कि	ऽ	याऽ	ऽऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	कि	स	की	ऽ	चा	ऽ	ह	में
×				०				×				०			

म	–	म	प	म	–	–	पम	ग	–	सा	रे	ग	–	–	म
पा	ऽ	ग	ल	कि	ऽ	ऽ	ऽऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	ग	रे	ग	रेसा	–	सा	म	सा	–	–	–	–	–,	प	ध
आ	हा	रे	ऽ	ऽऽ	ऽ	आ	हा	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	रा	ही
×				०				×				०			

						रें						नि			
ध	सां	सां	सां	सां	रें	सां	–	सां	–	नि	नि	ध–	–प	ध	नि
ब	न	ग	या	इ	स	के	ऽ	सा	ऽ	ऽ	थ	मेंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध															
प	–	–	–	–	–	–	–	ध	ध	–	सां	ध	–	प	ध
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	हाँ	ऽ	क	हाँ	ऽ	ले	ऽ
×				०				×				०			

मप	–	–	म	ग	–	सा	रे	ग	ग	ग	म	ग	–	रे	ग
जाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	मे	रे	म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽ
×				०				×				०			

रेसा	–	–	–	–	–	प	प	प	–	–	ग	प	प	प	ध
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ने	कौ	ऽ	ऽ	न	दे	श	मु	झे
×				०				×				०			

ध	सां	–	रें	रें–	–सां	रेंगं	–	रेंसां	–	–	–	–	–	–	–
को	ऽ	ऽ	ले	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
×				०				×				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	रें	रें	रें	रें	–	सांरें	गं	(गं)रें	सां	सां	नि	ध	–प	ध	नि
क	हाँ	ऽ	क	हाँ	ऽ	क्याऽ	ऽ	खे	ऽ	ल	दि	खा	ऽऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
धप	–	–	–	–	–	–	–	प	–	ध	सां	सां	–	सां	–
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भे	ऽ	द्	ब	ता	ऽ	ये	ऽ
×				०				×				०			
सां	–	सां	नि	नि	ध	पध	नि	धप	–	–	–	–	–	–	–
कै	ऽ	से	ऽ	कै	ऽ	सेऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
ध	ध	ध	सां	ध	–	प	ध	म	प	प	म	ग	ग	सा	रे
इ	स	की	ऽ	ली	ऽ	ला	ऽ	कौ	ऽ	न	क	हे	रे,	मे	रे
×				०				×				०			
ग	ग	ग	म	ग	–	रे	ग	रेसा	–	–	–	–	–	–	–
म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

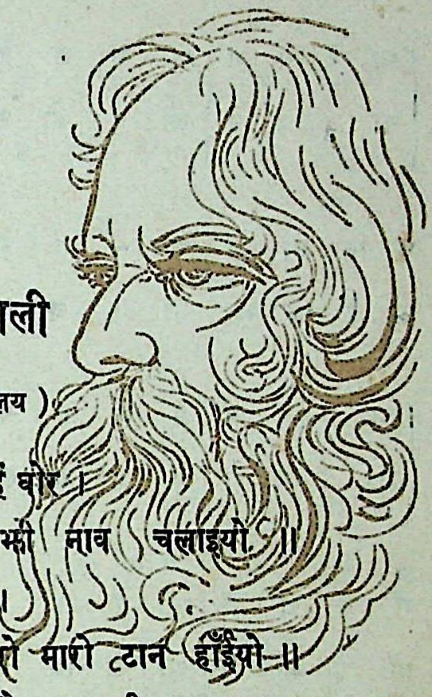

यमन–भूपाली

कहरवा (द्रुतलय)

वायु बहे जोर–जोर, बादल घिरे हैं घोर ।
अरे माझी नाव चलाइयो ॥
मैं बाँधू रे पाल, तू पतवार सँभाल ।
हाँई मारो मारो टान हाँईयो ॥
झनके बार-बार श्रृङ्खल झंकार, यह है न नाव की करुण पुकार ।
टूटे न बंधन चित्त है चंचल नैया को अब तू संभालियो ॥
हाँई मारो मारो टान हाँईयो ॥
गिन–गिन घड़ियां चंचल मनुआँ,
बोलो जाऊँ कहाँ या ना जाऊँ रे ।
संशय सागर मन में उतार,
उद्वेग क्यों है मन में ।
यदि आये झंझा तूफान काला, लुंठित हो चाहे सागर बावला,
तो भी मन में डर को न ला तू गीत मगन हो गाइयो ।
हाँई मारो मारो टान हाँईयो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	रे	नि़	सा	रे	रे	रे	रे	रे	रेरे
वा	यु	ब	हे	जो	र	जो	र	बा	द	ऽ	ल	घि	रे	हैं,	घोर
×				०				×				०			

										रे					
ध़	नि़	सा	रे	ग	-	ग	रे	नि़	रे	सा	-	-	-	-	-
अ	रे	मा	झी	ना	ऽ	व	च	ला	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

साप	प	प	म॑	प	म॑	प	प	प	नि	नि	ध	पप	म॑	ग	ग
मेंऽ	ऽ	बाँ	धु	रे	ऽ	पा	ल	तू	ऽ	प	त	वार	स	म्हा	ल
×				०				×				०			

ग															
गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	प	ध	रें	सां	-	ध	रें	सां	-
हाँ	ई	मा	रो	मा	रो	ता	न	हाँ	इ	यो	ऽ	हाँ	इ	यो	ऽ
×				०				×				०			

ध	रें	सां	-	-	-	-	-
हाँ	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

प	प	प	ग	प	प	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	-	सां	सां
झ	न	के	ऽ	वा	र	बा	र	शृं	ऽ	ख	ल	झं	ऽ	का	र
×				०				×				०			

सां	रें	रें	रें	रें	रें	सांरें	गं	गं	गं	-	गं	रें	रें	सां	सां
य	ह	है	न	ना	व	कीऽ	ऽ	क	रु	ऽ	ण	पु	का	ऽ	र
×				०				×				०			

सांगं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रें	-	सां	सां	नि	-	ध	ध
टूऽ	टे	ऽ	न	बं	ऽ	ध	न	चि	ऽ	त	है	चं	ऽ	च	ल
×				०				×				०			

सां	-	नि	नि	ध	ध	प	प	पध	ध	प	-	-	-	-	-
नै	ऽ	या	को	अ	ब	तु	स	म्हाऽ	लि	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(ग) गं गं गं गं	रें रें सां प	ध रें सां –	ध रें सां –
हाँ ई मा रो	मा रो टा न	हाँ इ यो ऽ	हाँ इ यो ऽ
×	०	×	०

ध रें सां –	– – – –
हाँ इ यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०

पूर्व उल्लिखित पुनरावृत्ति करें।

सा रे ग ग	ग ग ग –	ग – ग ग	रे रे सा –
गि न गि न	घं ड़ि याँ ऽ	चं ऽ च ल	म नु आँ ऽ
×	०	×	०

ध़ नि़ सा रे	ग ग ग ग	रेग रे सा –	– – – –
बो लो जा ऊँ	कँ हा या ना	जाऽ ऊँ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

ग प प प	प म॑ प प	प नि नि ध	प म॑ ग ग
सं ऽ श य	सा ऽ ग र	म न में उ	ता ऽ र ऽ
×	०	×	०

प नि नि ध	प म॑ ग म॑	म॑नि ध प –	– – – –
उ द् वे ग	क्यों ऽ है ऽ	मऽ न में ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प ग प ध	प ध (ध) प ध	धसां – सां सां	सां – सां –
य दि आ ये	झ न् झा ऽ	तूऽ ऽ फा न	का ऽ ला ऽ
×	०	×	०

सां रें रें रें	सांरें गं गं गं	गं – गं गं	रें – सां सां
लुं ऽ ठि त	होऽ ऽ चा हे	सा ऽ ग र	बा ऽ व ला
×	०	×	०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांगं	-	गं	-	|	रें	रें	सां	-	|	सांरें	रें	सां	-	|	नि	नि	ध	-
तोऽ	ऽ	भी	ऽ	|	म	न	में	ऽ	|	डऽ	र	को	ऽ	|	न	ला	तू	ऽ
×					०					×					०			

सां	-	नि	नि	|	ध	-	प	प	|	पध	ध	प	-	|	-	-	-	-
गी	ऽ	त	म	|	ग	ऽ	न	हो	|	गाऽ	इ	यो	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×					०					×					०			

पगं	गं	गं	गं	|	रें	रें	सां	प	|	ध	रें	सां	-	|	ध	रें	सां	-
हाँ	इ	ग़ा	रो	|	सा	रो	टा	न	|	हाँ	इ	यो	ऽ	|	हाँ	इ	यो	ऽ
×					०					×					०			

ध	रें	सां	-	|	-	-	-	- Λ
हाँ	इ	यो	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ V
×					०			

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें।

————

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

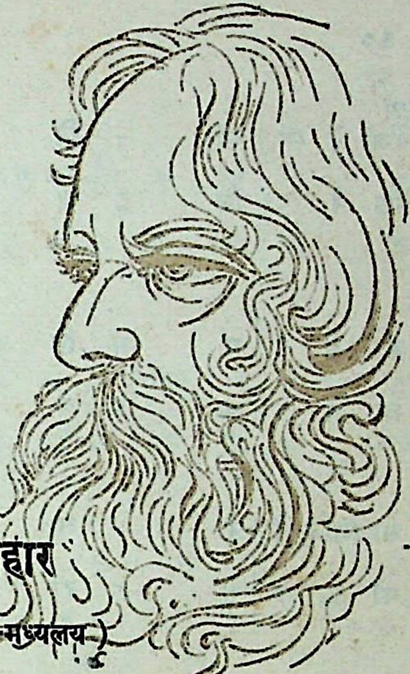

बागेश्री बहार

तेवड़ा (विलंबित-मध्यलय)

मेरे मिलन के लिये तू जाने कब से आरहा।
चाँद तेरा, तेरा सूरज छिपा रखेगा तुझे कहाँ ॥
जाने कब से सुबह संध्या तब चरण की ध्वनि बाजे।
दूत तेरा मुझको कब से बुला रहा, बुला रहा ॥
हे पथिक आज मेरी मिलन की बेला में,
हरष मानो जाग रहा है, काँपे मन में।
मिलन की बेला आई है रे छुटे मेरे काम सारे।
पवन आये हे महाराज तेरी गंध लेके ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

सां			ध	म	
रेंसां रें सां	सां –	त्रि धं	त्रि प म	त्रि –प	म ग
मेऽ रे ऽ	मि ऽ	ल न	के ऽ लि	ऽ ऽये	तू ऽ
×	२	३	×	२	३

			म		
म म प	प म	त्रि प	प मग़ मग़	मरे –	सा –
जा ने ऽ	क ऽ	ब से	आ ऽऽ ऽऽ	रऽ ऽ	हा ऽ,
×	२	३	×	२	३

सा सानि़ रे	रे –	सा –	सा म म	म –	म म
चाँ ऽऽ द	ते ऽ	रा ऽ	ते ऽ रा	सू ऽ	र ज
×	२	३	×	२	३

				प	ध
मग़ प –	प प	प –	प पप ध	धत्रि –	त्रिसां –
छिऽ पा ऽ	र खे	गा ऽ	तु झेऽ क	हाँऽ ऽ	ऽऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

नि नि –	नि नि	नि सां	सां सां सां	सां –	सां –
जा ने ऽ	क ब	से ऽ	सु ब ह	सं ऽ	ध्या ऽ
×	२	३	×	२	३

नि सां नि	रें रें	सां नि	नि सां नि	सांसां रें	सां त्रि
त व च	र ण	की ऽ	ध्व नि ऽ	बाऽ ऽ	जे ऽ,
×	२	३	×	२	३

म म –	त्रि ध	त्रि ध	नि सां सां	सां –	सां –
जा ने ऽ	क ब	से ऽ	सु ब ह	सं ऽ	ध्या ऽ
×	२	३	×	२	३

नि सां नि	रें रें	सां नि	नि सां नि	सां रें	सां त्रिध
त व च	र ण	की ऽ	ध्व नि ऽ	बा ऽ	जे ऽऽ
×	२	३	×	२	३

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(प)ध	त्रि	–	–	–	–	–	सांत्रि	सां	–त्रि	त्रि	ध	त्रि	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दूऽ	ऽ	ऽत	ते	ऽ	रा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प	पम	प	त्रि	प	म	ग॒	(ग॒)म	म	–	मम	प	प	–
मु	झऽ	को	क	ब	से	ऽ	बु	ला	ऽ	रऽ	हा	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प	पप	ध	(प)धत्रि	–	(ध)त्रिसां	–
बु	लाऽ	र	हाऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×			२		३	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

रे	रे	ग॒	रे	–	सा	रे	सां	नि़	सा	रे	–	रे	–
हे	ऽ	ऽ	प	ऽ	थि	क	आ	ऽ	ज	मे	ऽ	री	ऽ
×			२		३		×			२		३	

रेसा	रे	प	प	–ध	मप	धप	(म)प	म	ग॒	–	–	–	–
मिऽ	ल	न	की	ऽऽ	बेऽ	ऽऽ	ला	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

रे	रे	त्रि	ध	त्रि	प	ध	मप	मप	ग॒म	रे	–	सा	–
ह	र	ष	मा	ऽ	नो	ऽ	जाऽ	ऽऽ	ऽग	र	ऽ	हा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

(सा)म	–	–	म	–	म	–	(म)प	पप	ध	(प)धत्रि	–	–	–
है	ऽ	ऽ	काँ	पे	पे	ऽ	म	ऽऽ	न	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

(नि)सां	(नि)सां	ध॒	नि	–	नि	सां	सां	–	सां	सां	–	सां	–
मि	ल	न	की	ऽ	बे	ला	आ	ऽ	ई	है	ऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

								सां					
नि	सां	नि	सांरें	–	सां	नि	निंसां	रें	रेंसां	सां	–	नि॒	ध
												ऽ	ऽ
												नि॒ध॒	–
छू	ऽ	टे	मेऽ	ऽ	रे	ऽ	काऽ	ऽ	ऽम	सा	ऽ	रेऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प													
ध	नि॒	–	–	–	–	–	सांनि॒	सां	नि॒	नि॒	ध	नि॒	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पऽ	व	न	आ	ऽ	ये	ऽ
×			२		३		×			२		३	

म							ग॒						
नि॒	–	म	म	ग॒	म	ग॒	म	म	–	मम	प	प	–
हे	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ज	ते	री	ऽ	गंऽ	ऽ	ध	ऽ
×			२		३		×			२		३	

	प		प		ध	∧
पध	ध	ध	धनि॒	–	नि॒सां	–
लेऽ	ऽ	के	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×			२		३	v

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

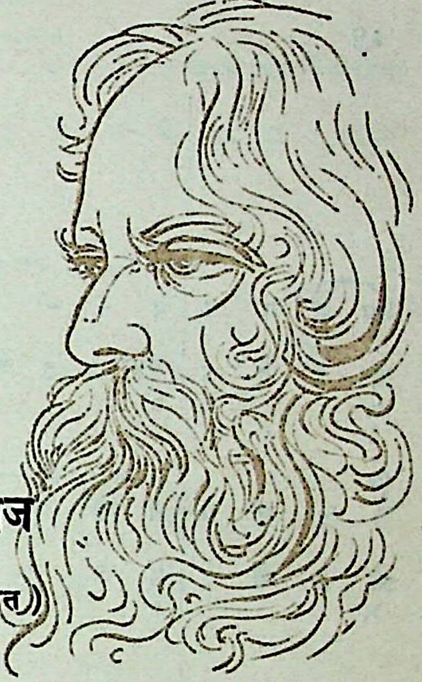

पीलू खम्माज

कहरवा (विलम्बित)

तुम कुछ दे जाओ,
मेरे प्राणों में गोपन में ।
फूल की गंध से, वंशी की धुन से,
मर-मर मुखरित पवन में ॥
तुम कुछ ले जाओ,
वेदना से वेदन में—
जो मेरे अश्रु हँसी में लीन,
जो वाणी नीरव नयनों में ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| – | | पत्रि (नि)ध पर्म
| | | तुऽ म कुऽ

धप म ग म | प – – प | प प म ग | म त्रि ध त्रि
छुऽ ऽ दे ऽ | जा ऽ ऽ ओ | ऽ ऽ मो र | प्रा ऽ ण ऽ
× | ० | × | ०

(नि)ध – म ग | म त्रि (नि)ध त्रि | पध त्रिसां निरें सांरेंसां | – पत्रि (नि)ध पर्म
में ऽ गो ऽ | प ऽ न ऽ | मेंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽऽ | ऽ तुऽ म कुऽ
× | ० | × | ०

धप म ग म | प प – प | नि सां निसां रेंगं | (गं)रें रें – नि
छुऽ ऽ दे ऽ | जा ओ ऽ, फू | ल की गऽ न्ऽ | ध से ऽ वं
× | ० | × | ०

सां रें धसां निसांत्रिध | (ध)म प – प | नि सां निसां रेंगं | (गं)रें रें – नि
शी की धुऽ ऽऽऽऽ | न से ऽ, फू | ल की गऽ न्ऽ | ध से ऽ वं
× | ० | × | ०

सां रें धसां निसांत्रिध | (ध)म प – – | प नि नि नि | नि नि नि नि
शी की धुऽ ऽऽऽऽ | न से ऽ ऽ | म र् म र | मु ख रि त
× | ० | × | ०

(नि)ध नि ध सां | निसां रेंसांनि सां – | – त्रि (त्रि)ध पर्म | धप म ग म
प ऽ व ऽ | नऽ मेंऽऽ ऽ ऽ | ऽ तु म कुऽ | छुऽ ऽ दे ऽ
× | ० | × | ०

प – – प | – सा सा रे | रे – ग – | – म मध (ध)प
जा ऽ ऽ ओ | ऽ तु म कु | छु ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ लेऽ ऽ
× | ० | × | ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मग रेग - -	गनि॒ नि॒ नि॒ नि॒	(नि॒) ध - म -	ध नि॒सां धसां नि॒सांनि॒ध
जाऽ ओऽ ऽ ऽ	वेऽ द् ना ऽ	से ऽ ऽ ऽ	वे ऽऽ दऽ ऽऽऽन
×	०	×	०

(ध) प - - -	- सा सा रे	रे - ग -	- म मध (ध) प
में ऽ ऽ ऽ	ऽ तु म कु	छ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ लेऽ ऽ
×	०	×	०

मग रेग - -	- प नि सां	निसां रेंगं॒ (गं॒) रें -	सांनि नि सां रें
जाऽ ओऽ ऽ ऽ	ऽ जो मे रे	अऽ ऽऽ श्रु ऽ	ऽऽ हँ सि में
×	०	×	०

(रें) ध सांनि॒ध पमं प	पनि नि नि नि	नि नि ध (नि) नि	(नि) ध सां निसां रेंसां
ली ऽऽऽ ऽऽ न	जोऽ वा णी नी	र व न ऽ	य ऽ नोंऽ ऽऽ
×	०	×	०

नि सां - -	- नि॒ (नि) ध पमं	धप म ग म	प - - प
में ऽ ऽ ऽ	ऽ तु म कुऽ	छ ऽ दे ऽ	जा ऽ ऽ ओ
×	०	×	०

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

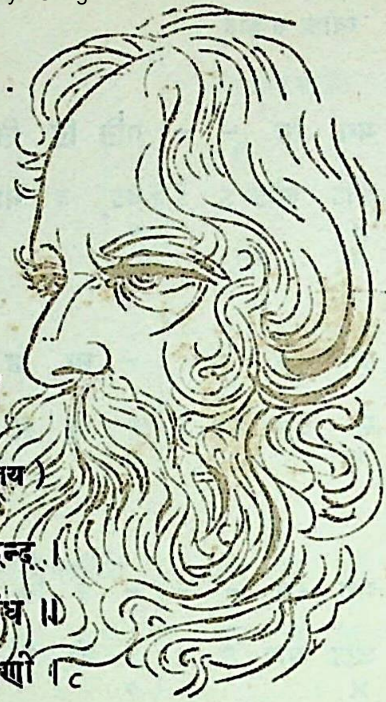

भैरवी–मिश्र

दादरा (मध्य–द्रुतलय)

हिंसा से मत्त पृथ्वी नित्य निठुर द्वन्द्व ।
घोर कुटिल पंथ उसका, लोभ जटिल बंध ॥
तेरा नव जन्म माँगे कातर सब प्राणी ।
करो त्राण महाप्राण लाओ अमृतवाणी ॥
विकसित करो प्रेमपद्म चिरमधु निष्यंद ।
शांत हे मुक्त हे, हे अनंत पुण्य ॥
करुणाघन धरणीतल करो कलक शून्य ॥

क्रंदनमय निखिल भुवन ताप दहन दीप्त ।
विपय–विष–विकार जीर्ण खिन्न अपरितृप्त ॥
देश–देश तिलक लगाये, रक्त कलुष ग्लानि ।
तव मंगल शंख लाओ, तव दक्षिण पाणि ॥
तव शुभ संगीत–राग, तव सुन्दर छन्द ।
शांत हे मुक्त हे, हे अनंत पुण्य ॥
करुणाघन धरणीतल करो कलंक शून्य ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	ध॒	ध॒	ध॒	प	-	प	-	प	प	मं	प
हिं	ऽ	सा	ऽ	से	ऽ	म	ऽ	त्त	पृ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि॒ध॒	-	-	नि॒	सां	रें॒	नि॒	-	गं॒	रें॒	रें॒	सां
ध्वी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	त्य	नि	ठु	र
×			०			×			०		

सां	नि	सां	-	-	-	सां	गं॒	गं॒	रें॒	सां	सां
द्व	न्	द	ऽ	ऽ	ऽ	घो	ऽ	र	कु	टि	ल
×			०			०			०		

			नि॒								
सां	रें॒	नि॒	ध॒	ध॒	प	मप	ग॒	ग॒	ग॒	म	ग॒
पं	ऽ	थ	उ	स	का	लोऽ	ऽ	भ	ज	टि	ल
×			०			×			०		

रे॒	-	-	सा	-	-	∧
बं	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ऽ	|
×			०			V

"हिंसा से मत्त पृथ्वी" तक पुनरावृत्ति करें।

ध॒	-	ध॒	-	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	-	सां
ते	ऽ	रा	ऽ	न	व	ज	न्	म	माँ	ऽ	गे
×			०			×			०		

सां	रें॒	रें॒	रे॒	रें॒	सां	सांरें॒	नि॒	-	सां	-	-
का	ऽ	त	र	स	ब	प्राऽ	ऽ	ऽ	णी	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

							मं				
सांगं॒	गं॒	-	गं॒	रें	गं॒	रेंमं	गं॒	-	रें॒	-	सां
कऽ	रो	ऽ	त्रा	ऽ	ण	मऽ	हा	ऽ	प्रा	ऽ	ण
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नि	गं	गं	रें	सां	सां	नि	सांरेंसां	निसां	निधु	–	–
ला	ऽ	यो	अ	मृ	त	वा	ऽऽऽ	ऽऽ	णीऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

धु	सां	सां	सां	रें	सां	नि	सां	नि	धु	–	प
वि	क	सि	त	क	रो	प्रे	ऽ	म	प	ऽ	द्म
×			०			×			०		

प	नि	नि	नि	धु	प	^{प}म	प	^{प}म	–	–	–
चि	र	म	धु	नि	ऽ	ष्य	न्	द	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सा	सा	रे	ग	–	–	रे	रे	ग	म	–	प
शा	न्	त	हे	ऽ	ऽ	मु	कु	त	हे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

^{प}म	नि	नि	धु	धु	प	म	प	^{प}म	–	–	–
हे	ऽ	अ	न	न्	त	पु	ऽ	ण्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

म	प	^{प}म	नि	धु	प	म	पम	ग	रे	ग	ग
क	रु	णा	ऽ	ध	न	ध	रऽ	णी	ऽ	त	ल
×			०			×			०		

म	म	म	सा	रे	ग	रे	–	सा	–	–	–
क	रो	क	लं	ऽ	क	शू	ऽ	न्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

“हिंसा से······बंध” तक पुनरावृत्ति करें।

सा	धु	धु	धु	प	म	प	पनि	धु	धु	प	ग
क्र	न	द	न	म	य	नि	खिऽ	ल	भु	व	न
×			०			×			०		

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	प	मप	प	म	-	-	-
ता	ऽ	प	द्	ह	न	दीऽ	प्	त	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	पनि॒	नि॒	ध॒	ध॒	प	मप	-	म	ग॒	रे	ग॒
वि	षऽ	य	वि	ष	वि	काऽ	ऽ	र	जी	र्	ण
×			०			×			०		

म	म	म	सा	रे॒	ग॒	(ग॒)रे॒	रे॒	सा	-	-	-
खि	न्	न	अ	प	रि	तृ	प्	त	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध॒	-	ध॒	ध॒नि॒	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	सां	सां
दे	ऽ	श	देऽ	ऽ	श	ति	ल	क	ला	गा	ये
×			०			×			०		

सां	रें॒	रें॒	रें॒	सां	सां	सांरें॒	नि॒	-	सां	-	-
र	क्	त	क	लु	ष	ग्लाऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सां	गं॒	गं॒	-	गं॒रें	गं॒	रें	मं	(मं)गं॒	रें॒	-	सां
त	व	मं	ऽ	गऽ	ल	शं	ऽ	ख	ला	ऽ	यो
×			०			×			०		

नि॒	नि॒गं॒	गं॒	-	रें॒	सां	(सां)नि॒	सांरें॒सां	नि॒सां	नि॒ध॒	-	-
त	वऽ	द	ऽ	क्षि	ण	पा	ऽऽऽ	ऽऽ	णिऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध॒	सां	सां	सां	सांरें॒	सां	(सां)नि॒	सां	नि॒	ध॒	-	प
त	व	शु	भ	संऽ	ऽ	गी	ऽ	त	रा	ऽ	ग
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

प	पनि	नि	-	ध	प	(प)म	प	म	-	-	-
त	वऽ	सुं	ऽ	द	र	छं	ऽ	द	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सा	सा	रे	ग	-	-	रे	रे	ग	म	-	प
शा	न्	त	हे	ऽ	ऽ	मु	क्	त	हे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

(प)म	नि	नि	(नि)ध	ध	प	म	प	(प)म	-	-	-
हे	ऽ	श्र	न	न्	त	पु	ऽ	ण्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

म	प	(प)म	नि	ध	प	म	पम	ग	रे	ग	ग
क	रु	णा	ऽ	घ	न	ध	रऽ	णी	ऽ	त	ल
×			०			×			०		

म	म	म	सा	रे	ग	(ग)रे	-	सा	-	-	-
क	रो	क	लं	ऽ	क	शू	ऽ	न्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

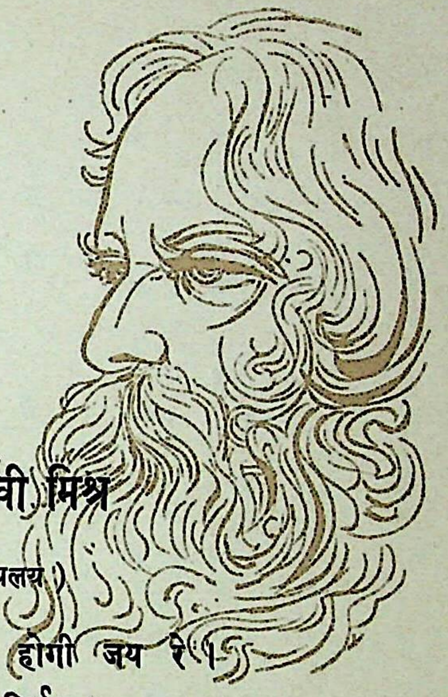

आसावरी-भैरवी मिश्र

झपताल (मध्यलय)

होगी जय, होगी जय, होगी जय रे।
ओहे वीर हे निर्भय।
चिर प्राण, जयी प्राण जयी रे आनन्दगान।
जयी प्रेम, जयी क्षेम जयी ज्योतिर्मय रे॥
यह आँधार होगा क्षय, होगा क्षय रे।
ओहे वीर हे निर्भय।
तजो नींद खोलो आँख अवसाद करो राख।
आशा-अरुणालोक हो उदय रे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

									सा
									हो

रे॒	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
गी	ऽ	ज	य	हो	गीऽ	ऽ	ज	य	हो
×		२			०		३		

प ध॒	सां	सां	–	रें॒	नि॒ सां	–	नि ध॒	–	ध॒
गी	ऽ	ज	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

ध॒	–	ध॒ सां	सां	ध॒	ध॒	–	ध॒ ग॒ं	ग॒ं	सा
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	र्भ	य,	हो
×		२			०		३		

रे॒	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
गी	ऽ	ज	य	हो	गीऽ	ऽ	ज	य	हो
×		२			०		३		

प ध॒	सां	सां	–	रें॒	नि॒ सां	–	नि॒ ध॒	–	ध॒
गी	ऽ	ज	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

ध॒	–	ध॒ सां	सां	सां	सां	ध॒	ध॒ ग॒ं	ग॒ं,	ध॒
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	र्भ	य,	चि
×		२			०		३		

ध॒	–	ध॒ सां	सां	सां रें॒	सां रें॒	नि॒	नि॒ सां	सां	सां
र	ऽ	प्रा	ण	ज	यी	ऽ	प्रा	ण	ज
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि		ध		गं					
सां	ध	गं	–	मं	गं	रें	सां	सां	ध
यी	ऽ	रे	ऽ	आ	न	न्द	गा	न	चि
×		२			०		३		

		ध		सां	सां		नि		
ध	–	सां	सां	रें	रें	नि	सां	सां	सां
र	ऽ	प्रा	ण	ज	यी	ऽ	प्रा	ण	ज
×		२			०		३		

नि		ध		गं					सां
सां	ध	गं	–	मं	गं	रें	सां	सां	गं
यी	ऽ	रे	ऽ	आ	न	न्द	गा	न	ज
×		२			०		३		

गं	रें	गं	गं	गं	गं	रें	गं	गं	गं
यी	ऽ	प्रे	म	ज	यी	ऽ	प्रे	म	ज
×		२			०		३		

		रें							
गं	रें	मं	–	गं	गं	रें	रें	सां	सां
यी	ऽ	ज्यों	ऽ	ति	र्म	य	रे	ऽ	ओ
×		२			०		३		

नि		ध			सां		ध		
सां	ध	सां	सां	सां	ध	–	गं	गं	सां
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	र्भ	य	"हो"
×		२			०		३		

उपरोक्त अंश की पुनरावृत्ति करें।

									सासा
									यह

रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
आँ	ऽ	धा	र	हो	गाऽ	ऽ	च	य	हो
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ध॒	ध॒	-	ध॒	ध॒ त्रि	-	ध॒	प	प
गा	ऽ	च्च	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

प	ग॒	ध॒	ध॒	ग॒	ग॒रे॒	-	सा	सा	सासा
हे	ऽ	वी	र	हे	निऽ	ऽ	भँ	य,	यह
×		२			०		३		

रे॒	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
आँ	ऽ	धा	र	हो	गाऽ	ऽ	च्च	य	हो
×		२			०		३		

प	ध॒	ध॒	-	ध॒	ध॒ त्रि	-	ध॒	प	प
गा	ऽ	च्च	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

प ध॒	-	प ध॒त्रि	त्रि	ध॒	ध॒त्रिध॒	-	प	प	ध॒
हे	ऽ	वीऽ	र	हे	निऽऽ	ऽ	भँ	य,	त
×		२			०		३		

ध॒	-	ध॒ सां	सां	सां रें॒	सां रें॒	त्रि	त्रि सां	सां	सां
जो	ऽ	नीं	द	खो	लो	ऽ	आँ	ख	अ
×		२			०		३		

त्रि सां	ध॒	ध॒ गं॒	-	गं॒ मं	गं॒	रें॒	सां	सां,	ध॒
व	ऽ	सा	ऽ	द	क	रो	रा	ख,	त
×		२			०		३		

ध॒	-	ध॒ सां	सां	सां रें॒	सां रें॒	त्रि	त्रि सां	सां	सां
जो	ऽ	नीं	द	खो	लो	ऽ	आँ	ख	अ
×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रि सां	ध	ध गं	–	गं मं	गं	रें	सां	सां,	सां गं
व	ऽ	सा	ऽ	द	क	रो	रा	ख,	आ
×		२			०		३		

गं	रें	गं	–	गं	गं	रें	गं	–	गं
शा	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रु	ए	लो	ऽ	क
×		२			०		३		

गं	रें	रें मं	–	गं	गं	रें	रें	सां	सां
हो	ऽ	ऽ	ऽ	उ	द	य	रे	ऽ	ओ
×		२			०		३		

त्रि सां	ध	ध सां	सां	सां	सां ध	–	ध गं	गं,	सा
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	भ	य,	"हो"
×		२			०		३		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

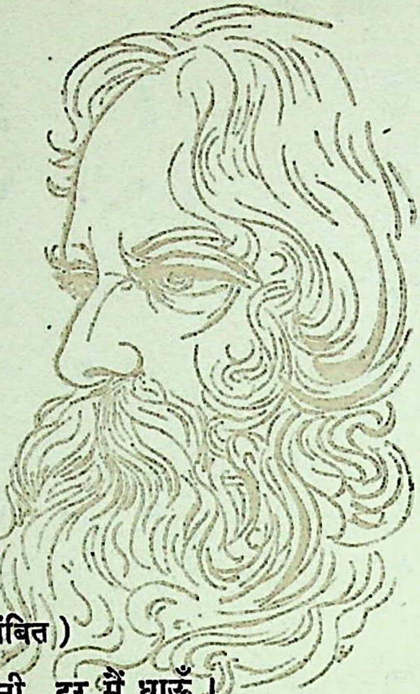

बिहाग

त्रिताल (विलंबित)

तुम्हारे असीम में प्रान–मन लेकर जितनी दूर मैं धाऊँ।
कहीं दुख, कहीं मृत्यु, कहीं विच्छेद ना पाऊँ ॥
मृत्यु वह लेवे मृत्यु का रूप, दुख होये हे दुःख का कूप।
तुम से जब मैं होके विमुख अपनी ओर निहारूँ ॥
हे पूर्ण तव चरणों में जो कुछ है सब निर्भयता में।
नहीं है भय, वह केवल मुझे, निशिदिन अब रोऊँ ॥
अन्तर ग्लानि संसार–भार पलक पड़ते ही कहाँ एकाकार,
जीवन में यदि स्वरूप तेरा देखने मैं पाऊँ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प नि ध	सां सां नि –	प पमं धप पम	म गमप ग ग
तु म्हा रे अ	सी म में ऽ	प्रा णऽ मऽ नऽ	ले ऽऽऽ क र
०	३	×	२

प			रे
ग म नि नि	ध – प –	म – गम प	ग – सा सा
जि त नी दू	र ऽ मैं ऽ	धा ऽ ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

			मं ध
सा सा म –	म – ग –	ग ग प मं	प – प –
क हीं ऽ ऽ	दुः ऽ ख ऽ	क हीं ऽ ऽ	मृ ऽ त्यु ऽ
०	३	×	२

		ध नि	ध ध
प नि – नि	नि – नि सां	नि – धनिसां –	नि – प प
क हीं ऽ वि	च्छे ऽ द ऽ	ना ऽ पाऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें ।

प – नि निनि	नि – नि –	सां – रें नि	सां – – सां
मृ ऽ त्यु वह	ले ऽ वे ऽ	मृ ऽ त्यु का	रू ऽ ऽ प
०	३	×	२

			प
सां – सां –	सां सां सांरेंसां –	नि – प प	नि – – नि
दुः ऽ ख ऽ	हो ये छेऽऽ ऽ	दुः ऽ ख का	कू ऽ ऽ प
०	३	×	२

सां गं रें –	सां सां नि –	प ध प म	ग – – ग
तु म से ऽ	ज ब मैं ऽ	हो ऽ के वि	मु ऽ ऽ ख
०	३	×	२

		ध नि	ध ध
ग म प नि	नि नि नि सां	नि – धनिसां –	नि – प प
अ प नी ऽ	ओ र नि ऽ	हा ऽ ऽऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ रूँ
०	३	×	२

"तुम्हारे असीम में·····ना पाऊँ" तक पुनरावृत्ति करें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा सा प प	प – प –	प प प –	प ध म –
हे पू ऽ र्णो	त ऽ व ऽ	च र णों ऽ	में ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

प नि नि नि	नि – नि नि	सां सां सां सांनि	(ध)नि – प –
जो ऽ कु छ	है ऽ स ब	नि र भ यऽ	ता ऽ में ऽ
०	३	×	२

(प)सां सां सां –	नि – – ध	पप ध प पम	म – ग –
न हीं है ऽ	भ ऽ ऽ य	वह के व लऽ	मु ऽ झे ऽ
०	३	×	२

ग ग ग ग	ग म प म	ग – – (रे)–	सा – – सा
नि शि दि न	अ ऽ ऽ ब	रो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

प प नि नि	नि – नि –	सां – रें नि	सां – – सां
अ न् त र	ग्ला ऽ नि ऽ	सं ऽ सा र	भा ऽ ऽ र
०	३	×	२

सां सां सां सां	सां सां सांरेंसां –	नि नि प प	(प)नि – – नि
प ल क प	ड़ ते हीऽऽ ऽ	क हाँ ए का	का ऽ ऽ र
०	३	×	२

(सां)सां गं रें रें	सां – नि –	प ध प म	ग – – म
जी व न में	थं ऽ दि ऽ	स्व रू प ते	रा ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

ग म प नि	नि – – सां	(ध)नि – धनिसां (नि)–	(ध)नि – (ध)प प
दे ख ने ऽ	मैं ऽ ऽ ऽ	पा ऽ ऽऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

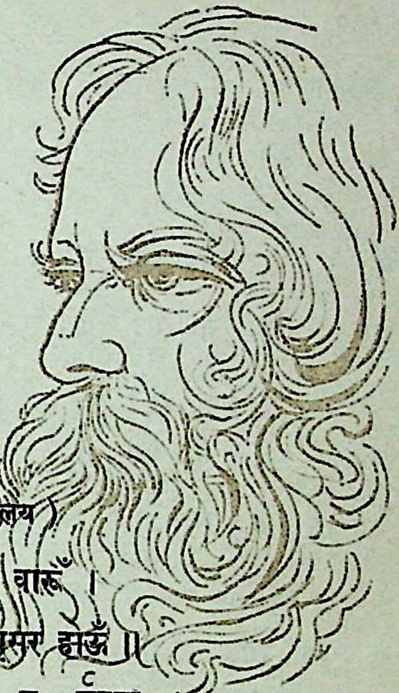

कीर्त्तनांग

कहरवा (मध्य–द्रुत लय)

उस आसन तले माटी पर मैं अपने को वारूँ ।
तेरे चरण की धूलि–कणों से मैं धूसर होऊँ ॥
मुझको यों मान देकर दूर न करना ।
सारा जीवन मुझको यों भुलावा न देना ॥
अ-मान सही पर तेरे पद तले खींचे ही रहूँ ।
तेरे चरण की धूलि–कणों से मैं धूसर होऊँ ॥
रहूँ मैं तेरे यात्री–दल के पीछे ।
स्थान देना मुझे तुम सब के नीचे ॥
प्रसाद हेतु कितने जन हैं दौड़े आये ।
चाह नहीं कुछ मुझको केवल दर्शन ही भाये ॥
अन्त में जो अवशेष बचे मैं वह–ही लेऊँ ।
तेरे चरण की धूलि–कणों से मैं धूसर होऊँ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

			रे ग
			उ स

म - प प	मप ध प -	- ध म प	ग म रे ग
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ उ स
×	०	×	०

म - प प	मप ध प -	प ध नि सांनि	ध निध प ध
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ	मा ऽ टी ऽऽ	प रऽ मैं ऽ
×	०	×	०

ध सां सां -	नि सांनि ध निध	प ध म प	ग म रे ग
अ प ने ऽ	को ऽऽ वा ऽऽ	रूँ, ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ, उ स
×	०	×	०

म - प प	मप ध प -	- ध म प	ग म रे ग
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ उ स
×	०	×	०

म - प प	मप ध प -	सां - सां -	सां सां सां सां
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ,	ते ऽ रे ऽ	च र ण की
×	०	×	०

रें सां रें सां	रें सां सां नि	नि सां सां -	नि सांनि ध निध
धू ऽ लि ऽ	क णों से ऽ	धू ऽ स ऽ	र ऽऽ हो ऽऽ
×	०	×	०

प ध म प	ग म रे ग ∧
ऊँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ, "उ स"
×	० ∨

"उस आसन तले" पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां सां सां –	सां – – –	सां – सांरें सां	सां – सांसां रेंसां
मु झ को ऽ	यों ऽ ऽ ऽ	मा ऽ ऽन दे	ऽ ऽ कऽ ऽर
×	०	×	०

नि सां नि धप	प ध पध सां	नि – – –	– – धप –
दू ऽ र नऽ	क ऽ रऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ
×	०	×	०

प – पध निसां	नि – धप प	– – – –	– – प प
सा ऽ राऽ ऽऽ	जी ऽ वऽ न	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ हे
×	०	×	०

प – पध निसां	(सां) नि – धप प	प ध ध –	ध – (ध) नि धप
सा ऽ राऽ ऽऽ	जी ऽ वऽ न	मु झ को ऽ	यों ऽ ऽ ऽऽ
×	०	×	०

प नि नि सांनि	ध नि॒ध प ध	प – – –	– – – –
मु ऽ ला वाऽ	न ऽऽ दे ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

ग म म प	प प प प	प – पध पम	प ध॒ ध॒नि॒ प
अ ऽ मा ऽ	स ही प र	ते ऽ रेऽ ऽऽ	प द तऽ ले
×	०	×	०

प – प ध॒	नि॒ –ध॒ नि॒ ध॒प	प – – –	– – – –
खीं ऽ ऽ ऽ	चे ऽऽ र ऽऽ	हूं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सां – सां –	सां सां सां सां	रें सां रें सां	रें सां सां नि
ते ऽ रे ऽ	च र ण की	धू ऽ लि ऽ	क णों से ऽ
×	०	×	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

नि सां सां –	नि सांनि ध ऩिध	प ध म प	ग म, रे ग
धू ऽ स ऽ	र ऽऽ हो ऽऽ	ऊँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ "उ स"
×	०	×	०

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

सा – सा सा	रे – रे ग	म – – ध	प धप म प
र ऽ हूँ मैं	ते ऽ रे ऽ	या ऽ ऽ त्री	द ऽऽ ल के
×	०	×	०

ग – – म	म – म प	प – – –	– – – –
पी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	छे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

पध निसां सां सां	नि – (ध)प प	प ध – –	– – नि धप
स्थाऽ ऽऽ न दे	ना ऽ मु झे	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ प्र भुऽ
×	०	×	०

पध निसां सां सां	(सां)नि – (ध)प प	प ध – –	ध – ध –
स्थाऽ ऽऽ न दे	ना ऽ मु झे	ऽ ऽ ऽ ऽ	तु ऽ म ऽ
×	०	×	०

सा – सा सा	रे ग म प	ग – – –	– – – –
स ऽ ब के	नी ऽ ऽ ऽ	चे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सां – सां सां	सां – सां –	सां रें सां –	सां – सांसां रेंसां
प्र ऽ सा दं	हे ऽ तु ऽ	कि त ने ऽ	ज ऽ नऽ ऽऽ
×	०	×	०

नि सां नि धप	प ध पध निसां	नि – – –	– – धप –
दौ ऽ ड़े ऽऽ	आ ऽ ऽऽ ऽऽ	ये ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ
×	०	×	०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

						ध									
पप	–	पध	निसां	नि	–	प	–	–	–	–	–	–	–	प	प
चाह	ऽ	नऽ	हींऽ	कु	ऽ	छ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	हे
×				०				×				०			

						ध								ध	
पप	–	पध	निसां	नि	–	प	–	प	ध	ध	–	ध	–	नि	धप
चाह	ऽ	नऽ	हींऽ	कु	ऽ	छ	ऽ	मु	झ	को	ऽ	के	ऽ	व	लऽ
×				०				×				०			

प	नि	नि	सांनि	ध	–	ध	निध	प	–	–	–	–	–	–	–
द	र	श	नऽ	ही	ऽ	भा	ऽऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	म	म	प	प	–	प	प	प	–	ध̲	म	प	ध	ध̲नि̲	प
अ	न्	त	में	ओ	ऽ	अ	व	शे	ऽ	प	ब	चे	ऽ	मैंऽ	ऽ
×				०				×				०			

पप	–	प	ध	नि̲	–ध̲	नि̲	ध̲प	प	–	–	–	–	–	–	–
वह	ऽ	ही	ऽ	ले	ऽऽ	ऊँ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सां	–	सां	–	सां	सां	सां	सां	रें	सां	रें	सां	रें	सां	सां	नि
ते	ऽ	रे	ऽ	च	र	ण	की	धू	ऽ	लि	ऽ	क	णों	से	ऽ
×				०				×				०			

नि	सां	सां	–	नि	सांनि	ध	नि̲ध	प	ध	म	प	ग	म,	रे	ग
धू	ऽ	स	ऽ	र	ऽऽ	दो	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	"उ	स"
×				०				×				०			

"उस आसन........धूसर होऊँ" तक पुनरावृत्ति करें ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

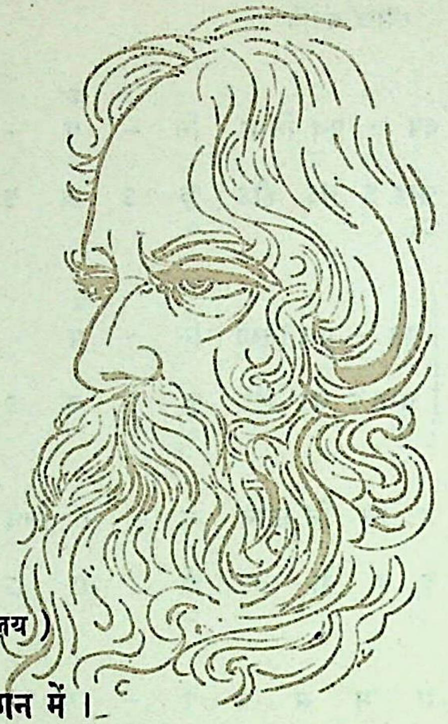

केदार

तेवड़ा (मध्यलय)

मेरी मुक्ति आलोक में रे इस गगन में ।
मेरी मुक्ति धूलिकण में फूल-फल में ॥
देह-मन के उस किनारे अपने को मैं कहाँ खोऊँ रे ।
मुक्ति मेरी पवन गावे गीत सुर में ॥
मेरी मुक्ति सर्वजन के मन में है रे ।
दुःख-बाधा तुच्छ जानूँ कठिन पन रे ॥
विश्वधाता की यज्ञशाला आत्महोम की वह्निज्वाला ।
जीवन अपना दूँ आहुती मुक्ति-आश में ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध	(ध)प	-	म	म	रे	-	सा	साम	म	मग	पर्म	प	-
मेऽ	री	ऽ	मु	क्	ति	ऽ	आ	लोऽ	क्	मेंऽ	ऽऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प	सां	सां	धनि	नि	धप	-	पध	(ध)प	-	म	म	रे	-
इ	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ	मेऽ	री	ऽ	मु	क्	ति	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	साम	म	मग	पर्म	प	-	सा	सा	-	रे	रे	रे	-
आ	लोऽ	क	मेंऽ	ऽऽ	रे	ऽ	मे	री	ऽ	मु	क्	ति	ऽ
×			२		३		×			२		३	

रे	ग	रे	ग	ग	ग	म	म	प	ध	मप	प	मग	म
धू	ऽ	लि	क	ण	में	ऽ	फू	ऽ	ल	फऽ	ल	मेंऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

म	सां	सां	धनि	नि	धप	-
इ	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ
×			२		३	

"मेरी मुक्ति······इस गगन में, मेरी मुक्ति······में रे" तक पुनरावृत्ति करें।

प	ध	प	पनि	ध	नि	-	सां	सां	सां	सां	नि	रेंसां	-
दे	ऽ	ह	मऽ	न	के	ऽ	उ	स	कि	ना	ऽ	रेंऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सां	निसां	ध	सां	ध	निरें	-	सां	सां	नि	निसां	ध	प	-
अ	ऽप	ने	को	ऽ	मैंऽ	ऽ	क	हाँ	खो	ऊँऽ	ऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सांगं	गं	गं	रें	-	सां	नि	निरें	सां	सां	ध	-	प	-
मुऽ	ऽ	क्ति	मे	ऽ	री	ऽ	पऽ	व	न	गा	ऽ	वे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

साम	म	म	मग	पर्म	प	-	प	सां	सां	धनि	नि	धप	-
गीऽ	ऽ	त	सुऽ	ऽर	में	ऽ	इ	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	सा	सा	रे	रे	रे	-	रे	गरे	ग	म	म	प	-
मे	री	ऽ	मु	क	ति	ऽ	स	ऽरू	व	ज	न	के	ऽ
×			२		३		×			२		३	
मं	प	मंध	(ध)प	-	म	-	गं	-	गं	गं	-	गं	-
म	न	मेंऽ	है	ऽ	रे	ऽ	दुः	ऽ	ख	बा	ऽ	धा	ऽ
×			२		३		×			२		३	
गंमं	-	मं	रें	-	सां	-	साम	म	म	म	ग	म	-
तुऽ	ऽ	च्छ	जा	ऽ	नूँ	ऽ	कऽ	ठि	न	प	ण	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	
प	ध	प	नि	ध	नि	नि	सां	-	सां	सां	नि	सां	-
वि	ऽ	श्व	धा	ऽ	ता	की	य	ऽ	ज्ञ	शा	ऽ	ला	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सां	-	ध	सां	-	सां	रें	सां	-	नि	निसां	-	ध	प
आ	ऽ	त्म	हो	ऽ	म	की	व	ऽ	हि	ज्वा	ऽ	ला	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सांगं	गं	गं	रें	रें	सां	नि	सां	गं	गं	रें	-	सां	-
जीऽ	व	न	अ	प	ना	ऽ	दूँ	ऽ	आ	हु	ऽ	ती	ऽ
×			२		३		×			२		३	
सा	म	म	मग	पमं	प	-	प	सां	सां	धनि	नि	धप	-
मु	क्	ति	आऽ	शऽ	में	ऽ	इ	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

समाप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट

रवीन्द्र-संगीत को उसकी विषय-विचित्रता के कारण कई भागों में विभक्त किया गया है। इनमें 'पूजा' 'स्वदेश' 'प्रेम' 'प्रकृति' 'विचित्र' 'आनुष्ठानिक' इत्यादि भाग उल्लेखनीय हैं। यद्यपि कुछ लोग रवीन्द्रनाथ को प्रकृति का ही कवि मानते हैं, और इसमें भी विशेष रूप से उनके वर्षा-गीत अतुलनीय हैं, फिर भी उनके अन्य भागों के गीत भी उच्चकोटि के हैं। इस पुस्तक में निम्न भागों के गीत संकलित किये गये हैं। गीतों का जो संक्षिप्त परिचय दिया गया है वह नितान्त ही अति साधारण भाव से किया गया है।

पूजा

ध्वनित आह्वान (ध्वनिल आह्वान) : प्रभात-कालीन 'वैतालिक' प्रार्थना में इस गीत का गायन होता है।

मेरे मिलन के लिये (आमार मिलन लागि) : अराध्य देवता को उद्देश्य करके भक्त हृदय की नम्र भावना ही इस गीत में प्रमुख है।

तुम्हारे असीम में (तोमार असीमें) : ईश्वर का जब तक स्मरण किया जाता है, पार्थिव सुख-दुःख से हम विचलित नहीं होते हैं। लेकिन जब हम उसकी पूजा या ध्यान से विमुख होते हैं तो सांसारिक विपत्तियों का बोझ अनुभव करते हैं।

होगी जय (हंबे जय) : यह गीत रवीन्द्रनाथ के 'फाल्गुनी' नाटक में भी है। धीर तथा साहसी व्यक्ति की समस्त विपत्तियाँ दूर होकर विजय श्री उसका स्वागत करेगी। ऐसी ही उदात्त वाणी इस गीत में है।

उस आसन तले (ओइ आसन तले) : भगवान के चरणों तले रहने की भक्त की आकांक्षा इस गीत में मुख्य है।

मेरी मुक्ति आलोक में रे (आमार मुक्ति आलोय-आलोय) : भक्त को अपनी मुक्ति उन्मुक्त आकाश और आलोक रश्मि में दिखती है। साथ ही देहातीत और मानसिक जगत् से दूर कहीं मुक्ति की आशा में जाना भी चाहता है। इस गीत में कवि ने अपनी मुक्ति गीत के सुर में देखी है।

स्वदेशी

ओ भुवन मन मोहिनी (अयि भुवन मन मोहिनी) : भारत माता को उद्देश्य करके महाकवि ने इस गीत की रचना की है।

प्रकृति

वीणा मेरी कौन सुर गावे (मोर वीणा उठे कोन सुरे बाजि) : इस गीत में वसंत ऋतु के आगमन का पूर्वाभास दिखाई पड़ता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रखर तपन ताप से (प्रखर तपन तापे) : ग्रीष्मकाल के उदास वातावरण का चित्रण है इस गीत में !

बादल बाउल बजा रहा रे (बादल बाउल बाजाय रे) : वर्षाकाल के उमड़ते हुये बादलों के झुंड को बंगाल के एक गायक सम्प्रदाय बाउल से तुलना की है। ये लोग गाने के साथ-साथ नाचते भी हैं। वर्षाकाल की अनुभूति का इस गीत में सजीव चित्रण है !

सावन गगन में (शाङ्गन गगने) : रवीन्द्रनाथ की 'भानुसिंहेर पदावली' से यह गीत लिया गया है। यह व्रज बुलि (व्रजभाषा) में लिखा गया है। एक समय किशोर रवीन्द्रनाथ ने प्राचीन पदावली की प्रेरणा से ही ऐसे गीतों को 'भानुसिंह' के नाम से लिखा था। विद्यापति आदि कवियों ने जिस प्रकार अपने पदों में भनिता 'भनई विद्यापति' से की है, रवीन्द्रनाथ ने भी उसका अनुकरण 'भने भानु' 'भानुसिंह तव दास' तथा 'भानुसिंह वंदिछे' से किया है। इस गीत में वर्षा-काल में राधा का विरह तथा उनकी कृष्ण-दर्शन की आकुलता को कवि ने बड़े मधुर ढङ्ग से चित्रित किया है। रूपांतर में भी विशेष कोई परिवर्त्तन नहीं किया गया है।

नमो नमो नम करुणा-घन : ग्रीष्मकाल के पश्चात वर्षा को करुणाघन मूर्त्ति में उतरते देख कवि ने इस गीत से उसकी वंदना की है।

आज वर्षण मुखरित (आजि वरिषन मुखरित) : इस गीत में वर्षाकाल की रात्रि में विरहिणी की मनोव्यथा फूट पड़ी है।

मेरा मन मेघ का साथी (मन मोर मेघेर संगी) : वर्षाकाल के मेघ को देखकर कवि-मन असीम दिगंत में हंस-बलाकाओं की भाँति विचरण करना चाहता है। वर्षाकाल की प्रकृति का चिर-परिचित रूप हमें इस गीत में दिखाई पड़ता है।

बादल धारा चली गई (बादल धारा हलो सारा) : वर्षाकाल के अन्त में प्रकृति के उदास वातावरण को चित्रित किया गया है।

शरत आलोक के कमलवन में (शरत आलोर कमल वने) : शरत-काल के आगमन पर हमारे मनमें जो भाव आते हैं—उनका रूप इस गीत में कवि ने गाया है।

वसंत जाग्रत द्वार तेरे (आजि वसंत जाग्रत द्वारे) : वसंत के आगमन पर मानव-मन में जो एक विशेष अभिव्यक्ति आती है—इस गीत में उसीका प्रतिफलन है।

ओरे गृहवासी खोल द्वार (ओरे गृहवासी खोल दार) : शान्तिनिकेतन में यह गीत प्रतिवर्ष होली के दिन नृत्य आदि के साथ गाया जाता है।

अरी बधू सुन्दरी (ओगो बधू सुन्दरी) : इस गीत में वसंत ऋतु का मनोहर चंचल रूप दिखाई पड़ता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झरे-झरे-झरे रंग का झरना (झर-झर-झर-झरे रंगेर झरना) : वसंत में उत्फुल्लित मानव का आनन्द गान इस गीत से गाया है कवि ने !

अरे आओ रे (ओरे आय रे) : सम्पूर्ण आनन्द को त्याग में विलीन करने का मधुर गान !

तुम कुछ दे जाओ (तुमि किछु दिये जाओ) : वसंत के आनन्द में भी कवि ने वेदना का अनुभव किया है। प्रबल आनन्द में भी जो एक वेदना रहती है— इस गीत में उसी का रूप दिखाई पड़ता है।

विचित्र

दूर गाँव से (ग्राम छाड़ा ओई) : यह गीत रवीन्द्रनाथ के प्रायश्चित नाटक में भी है। इसका सुर बंगाल के गायक समुदाय 'बाउलों' जैसा है।

वायु बहे जोर-जोर (खर वायु वय वेगे) : रूपक के माध्यम से तूफान को देखकर नाविक को सावधान रहने का अभय आश्वास !

हिंसा से उन्मत्त पृथ्वी (हिंसाय उन्मत्त पृथ्वी) भगवान बुद्ध के जन्म-दिवस के लिये रचित। इस गीत का दूसरा चरण साधारणतः नहीं गाया जाता है। इसीलिये इस पुस्तक में केवल प्रथम और तृतीय चरण ही दिये गये हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगीत कार्यालय के प्रकाशन

बालसंगीत शिक्षा भाग १ व २	१–२५	सूरसंगीत भाग १ व २ प्रत्येक	१–५०
" " " ३	१–००	ताल अंक ...	४–००
संगीत किशोर	१–५०	ठुमरी अंक ...	२–५०
संगीत शास्त्र	१–००	सन्त संगीत अंक	२–५०
'क्रमिक पुस्तक' भाग १	१–००	राष्ट्रीय संगीत अंक	२–५०
" भाग ३ व ४ प्रत्येक	१०–००	राग अंक ...	२–५०
" भाग २, ५ व ६ प्रत्येक	८–००	वाद्य संगीत अंक	३–००
संगीत सोपान	३–००	बिलावल थाट अंक	२–५०
संगीत विशारद	५–००	कल्याण थाट अंक	२–५०
संगीत सीकर	५–००	भैरव थाट अंक	२–५०
संगीत अर्चना	५–००	पूर्वी थाट अंक	२–५०
संगीत कादम्बिनी	५–००	खमाज थाट अंक	२–५०
भातखंडे संगीतशास्त्र भाग १	५–००	काफी थाट अंक	२–५०
" " भाग २	६–००	मारवा थाट अंक	२–५०
" " भाग ३	६–००	नृत्य अंक ...	३–००
" " भाग ४	१५–००	नृत्यशाला ...	२–००
मारिफुन्नग़मात भाग १	६–००	कथकलि नृत्यकला	२–५०
" भाग २	६–००	नृत्य भारती	३–००
" भाग ३	१–२५	म्यूज़िक मास्टर	२–००
संगीत सागर	६–००	महिला हारमोनियम गाइड	१–५०
बेला विज्ञान	४–००	संगीत पारिजात भाग–१	४–००
सितार मालिका	५–००	स्वरमेल कलानिधि	१–००
कलावन्तों की गायकी	३–००	संगीतदर्पण ...	२–००
हमारे संगीत रत्न	१५–००	फ़िल्म संगीत भाग २६ वाँ	४–००
सहगल संगीत	२–५०	आवाज़ सुरीली कैसे करें ?	२–००
बैंजो मास्टर	२–००	अप्रकाशित राग भाग १,२,३.	४–५०
संगीत पद्धतियों का तु० अध्ययन	२–५०	मृदङ्ग तबला प्रभाकर	२–००
स्वरमालिका	२–००	संगीत निबंधावली भाग १	२–००
रवीन्द्र संगीत	२–००	ताल प्रकाश	छप रही हैं ।
उ०भार० संगीत का सं०इति०	२–००	रविशंकर के आर्केस्ट्रा	छप रही हैं ।
हरिदास अंक	१–००		

'संगीत' मासिक पत्र सन् १६३५ से बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ६)५६

प्रकाशक—सङ्गीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ
भरतनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi